गैरसैंण,सोमवार
10 जून 2024
वर्षः 16
अंकः 47 पृष्ठः 4
मूल्यः 2.00
RNI No.UTTHIN/2005/16338

जयन्त

निर्भीक – निष्पक्ष – जनसरोकार

www.dainikjayantnews.com
स्थापित 1979
संस्थापक : स्व. नरेन्द्र उनियाल

डाक पंजीयन पी.ए.ओ.07-2024-26 फोनः 9412081969 email: nagendra.uniyal@gmail.com

एक नजर

नवीन पटनायक के करीबी पांडियन ने राजनीति से लिया संन्यास!

भुवनेश्वर,ओडिशा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक के करीबी सहयोगी वी.के. पांडियन ने रविवार को सक्रिय राजनीति से संन्यास लेने की घोषणा की है. यह फैसला बीजू जनता दल (बीजद) को लोकसभा और विधानसभा चुनावों में मिली करारी हार के बाद लिया गया है.वी.के. पांडियन बीजद में एक अहम भूमिका निभाते थे और पटनायक के बेहद भरोसेमंद व्यक्ति माने जाते थे. बीजेपी जहां ओडिशा में अपने बूते सरकार बना रही है, वहीं ओडिशा की लोकसभा की 21 सीटों में से 19 सीटें भी बीजेपी के खाते में आई.पांडियन के संन्यास की घोषणा से राजनीतिक गलियारों में हलचल मच गई है. यह माना जा रहा है कि बीजद को चुनावों में मिली हार के बाद पार्टी में बड़े बदलाव हो सकते हैं. पांडियन का जाना बीजद के लिए एक बड़ा झटका है, क्योंकि वे पार्टी के एक महत्वपूर्ण रणनीतिकार और पटनायक के विश्वासपात्र थे.

जम्मू–कश्मीर में 70 से ज्यादा विदेशी आतंकवादी सक्रिय, 15वीं कोर के जीओसी ने की पुष्टि

श्रीनगर। श्रीनगर स्थित सेना की 15वीं कोर के जनरल ऑफिसर कमांडिंग (जीओसी) लेफ्टिनेंट जनरल राजीव घई ने रविवार को केंद्र शासित प्रदेश में विदेशी आतंकवादियों की मौजूदगी के बारे में जम्मू–कश्मीर के डीजीपी आर.आर. स्वैन द्वारा बताये गये आंकड़ों की पुष्टि की।उत्तरी कश्मीर के बारामूला में जनरल बिपिन रावत स्टेडियम में कारगिल के युद्धवीरों के सम्मान समारोह से इतर संवाददाताओं से बात करते हुए लेफ्टिनेंट जनरल घई ने कहा, डीजीपी आर.आर. स्वैन ने जम्मू–कश्मीर में 70–80 विदेशी आतंकवादियों के सक्रिय होने की जो बात कही है वह सही है। जीओसी ने कहा कि सुरक्षा बलों ने अब स्थानीय की बजाय विदेशी आतंकवादियों पर फोकस करना शुरू कर दिया है। उन्होंने कहा, सभी सुरक्षा एजेंसियां पूरे तालमेल के साथ इन विदेशी आतंकवादियों से निपट रही हैं।दक्षिण कश्मीर में सबसे लंबे समय तक एलईटी का कमांडर रहे रियाज दार के मारे जाने पर जीओसी ने कहा कि आतंकवादियों के खिलाफ हर अभियान सफल हो रहा है।उन्होंने कहा कि कश्मीर में एलओसी पर हालात स्थिर हैं। उन्होंने सेना के हिमालयन रेजिमेंट की तारीफ करते हुए कहा, कारगिल युद्ध में इस रेजीमेंट ने दुश्मनों को करारी शिकस्त दी। जम्मू–कश्मीर में आगामी विधानसभा चुनाव के बारे में लेफ्टिनेंट जनरल घई ने कहा कि घाटी में सुरक्षा के हालात स्थिर बने हुए हैं और आगामी विधानसभा चुनाव के दौरान हालत स्थिर बनाए रखने के लिए सभी उपाय किये गये हैं।

यूपी और पूर्वी भारत में अगले पांच दिन लू का अलर्ट, महाराष्ट्र में भारी बारिश की चेतावनी

नईदिल्ली,उत्तर भारत में अभी भी गर्मी से राहत नहीं मिल रही. देश के उत्तरी राज्यों में लू की स्थिति बनी हुई है. ज्यादातर स्थानों पर तापमान अब भी 45 डिग्री से ऊपर बना हुआ है. वहीं दक्षिण के राज्यों में मानसून आने के बाद से बारिश का दौर शुरू हो गया है. बता दें कि दक्षिण–पश्चिम मानसून ने केरल में दो जून को दस्तक दी थी. उसके बाद से केरल और उसके आसपास के राज्यों में बारिश शुरू हो गई. अब मानसून आगे बढ़ रहे है. बताया जा रहा है कि मानसून ने महाराष्ट्र के साथ–साथ गोवा और कोंकण में भी दस्तक दे दी है. ऐसे में यहां भी बारिश का दौर शुरू हो गया है.इसी बीच मौसम विभाग ने लू को लेकर अलर्ट जारी किया है, मौसम विभाग के मुताबिक, अगले पांच दिनों तक देश के पूर्वी हिस्से के अलावा उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्सों में गर्मी से राहत नहीं मिलेगी. इन पांच दिनों के दौरान यहां लू की स्थिति जारी रहने की संभावना है. मौसम विभाग का कहना है कि लू से बचने के लिए दोपहर के समय घरों से निकलने में परहेज करें. बता दें कि इससे के साथ ही दिल्ली, हरियाणा और राजस्थान, मध्य प्रदेश, पंजाब और चंडीगढ़ में भी गर्मी पड़ रही है. जिससे लोग बेहाल हैं. दक्षिण–पश्चिम मानसून ने महाराष्ट्र, गोवा और कोंकण में दस्तक दे दी है. इस बीच भारत मौसम विज्ञान विभाग ने 09 और 10 जून को दक्षिण कोंकण के अलावा गोवा, दक्षिण मध्य महाराष्ट्र और तटीय और उत्तरी आंतरिक कर्नाटक में भारी से बहुत भारी बारिश का अलर्ट जारी किया है.

नरेंद्र मोदी ने रचा इतिहासः तीसरी बार बने पीएम

नई दिल्ली , अट्ठारहवीं लोकसभा के चुनाव में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) की जीत के बाद भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेता नरेन्द्र मोदी ने रविवार को लगातार तीसरी बार भारत के प्रधानमंत्री पद की शपथ ली। पंडित जवाहरलाल नेहरू के बाद पीएम मोदी पहले ऐसे गैर–कांग्रेसी हैं जिन्होंने लगातार तीसरी बार देश के शीर्ष पद की शपथ ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने उन्हें यहां राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक समारोह में पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। इसके साथ ही मोदी ने लगातार तीन बार प्रधानमंत्री बनने के देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के रिकॉर्ड की बराबरी कर ली। मोदी 2014 में लोकसभा चुनाव में भाजपा की जीत के बाद पहली बार देश के प्रधानमंत्री बने थे। इसके बाद 17वीं लोकसभा के चुनाव में भारी बहुमत से जीत के बाद वह लगातार दूसरी बार प्रधानमंत्री बने।

नेहरू 1947 से स्वतंत्रता के बाद से सबसे लंबे समय तक सेवा देने वाले भारतीय प्रधानमंत्री हैं। उनकी मृत्यु 27 मई 1964 को हुई थी और वह उस समय भी देश के प्रधानमंत्री थे। साल 1952 में हुए पहले आम चुनाव में जीत के बाद वह पहली बार प्रधानमंत्री निर्वाचित हुए थे। इसके बाद 1957 और 1962 के आम चुनावों में भी कांग्रेस ने जीत दर्ज की और नेहरू फिर देश के प्रधानमंत्री बने।

साल 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा पूर्ण बहुमत हासिल नहीं कर पाई है। उसे 240 सीटें मिली हैं। हालांकि, भाजपा नीत राजग ने 293 सीटों के साथ बहुमत के आंकड़े को पार कर लिया। इसके बाद राजग की बैठक में मोदी को पिछले दिनों भाजपा और राजग संसदीय दल का नेता चुना गया था। नेता चुने जाने के बाद मोदी ने राष्ट्रपति भवन जाकर द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात की थी और सरकार बनाने का दावा पेश किया था।

रजनीकांत से लेकर शाहरुख तक, मोदी सरकार के शपथ ग्रहण के साक्षी बने ये सितारे

नई दिल्ली । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी रविवार (9 जून) को लगातार तीसरे कार्यकाल के लिए शपथ लेने के लिए तैयार हैं, जिससे वह पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की उपलब्धि की बराबरी करेंगे। राष्ट्रपति भवन में होने वाला यह कार्यक्रम हाल के राष्ट्रीय चुनावों में शानदार जीत के बाद नरेंद्र मोदी के तीसरे कार्यकाल का प्रतीक होगा। इस शपथ ग्रहण समारोह का साक्षी बनने के लिए रजनीकांत और कंगना रणौत समेत कई सितारे दिल्ली पहुंच चुके हैं।

पीएम नरेंद्र मोदी के शपथ ग्रहण समारोह में शामिल होने के लिए अभिनेता रजनीकांत भी दिल्ली पहुंच गए हैं। मीडिया से मुखातिब होते हुए थलाइवा ने कहा कि ये बहुत बड़ी उपलब्धि है और उनकी शुभकामनाएं पीएम मोदी के साथ हैं।

नरेंद्र मोदी के शपथ ग्रहण समारोह में शामिल होने के लिए बॉलीवुड अभिनेता अनिल कपूर भी दिल्ली पहुंच गए हैं। एएनआई से बात करते हुए अनिल कपूर ने कहा कि वह बस यही चाहते हैं कि देश समृद्ध हो। अभिनेत्री रवीना टंडन भी इस ऐतिहासिक क्षण की साक्षी बनने राष्ट्रपति भवन पहुंच चुकी हैं। रवीना, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को तीसरी बार शपथ ग्रहण करते हुए देखने के लिए उत्सुक हैं।

बॉलीवुड के बादशाह शाहरुख खान भी पीएम मोदी के शपथ ग्रहण समारोह का हिस्सा बनने दिल्ली के राष्ट्रपति भवन पहुंचे हैं। गाढ़े नीले रंग के सूट–बूट में सुपरस्टार का अंदाज देखते ही बन रहा है। नरेंद्र मोदी तीसरी बार भारत के प्रधान मंत्री के रूप में शपथ ले रहे हैं। इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने कंगना रणौत भी पहुंची हैं।

अभिनेत्री–राजनेता और भाजपा उम्मीदवार कंगना रणौत ने मंडी लोकसभा सीट पर अपने कांग्रेस प्रतिद्वंद्वी विक्रमादित्य सिंह के खिलाफ 74,755 वोटों के अंतर से जीत हासिल की।

इनको मिली जिम्मेदारी

नई दिल्ली । नरेंद्र मोदी ने तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेते हुए देश के पहले पीएम जवाहर लाल नेहरू के रिकॉर्ड की बराबरी कर ली है। कैबिनेट मंत्री बनने वालो में अमित शाह, राजनाथ सिंह, नितिन गडकरी समेत कई दिग्गजों के नाम हैं। बीजेपी की ओर से राजनाथ, गडकरी जैसे वरिष्ठ नेता लगातार तीसरी बार कैबिनेट मंत्री बने हैं।

किसने–किसने ली कैबिनेट पद की शपथ

राजनाथ सिंह
अमित शाह
नितिन गडकरी
जेपी नड्डा
शिवराज सिंह चौहान
निर्मला सीतारमण
एस जयशंकर
मनोहर लाल खट्टर
एचडी कुमारस्वामी
पीयूष गोयल
धर्मेंद्र प्रधान
जीतन राम मांझी
ललन सिंह

चार बार सीएम रहने के बाद अब केंद्र में मंत्री बने शिवराज सिंह चौहान

भोपाल । मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह को नरेंद्र मोदी के केंद्रीय मंत्रिमंडल में मंत्री बनाया गया है। उन्होंने छठे नंबर पर शपथ ली है। इससे मध्य प्रदेश की ताकत और ज्यादा बढ़ेगी। विदिशा से छठवीं बार सांसद चुने गए शिवराज सिंह चौहान प्रदेश में भाजपा के सबसे कद्दावर नेता हैं। वह मध्य प्रदेश के पहले ऐसे मुख्यमंत्री हैं, जिन्होंने सर्वाधिक समय तक मुख्यमंत्री पद का कार्यभार संभाला है। उनका कार्यकाल करीब 16.5 वर्ष का रहा। इससे पहले भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष व भाजयुमो के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी रहे हैं। शिवराज सिंह चौहान को मध्य प्रदेश में 'मामा' नाम से भी पुकारा जाता है। उनका पेशा राजनीति और कृषि रहा है। सीहोर जिले के बुधनी में 5 मार्च 1959 को जन्मे शिवराज अब 64 के हो चुके हैं। लेकिन ऊर्जा से अब भी किसी युवा को मात देने की क्षमता रखते हैं। उन्होंने बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल से शिक्षा हासिल की है। एमए (दर्शनशास्त्र) कर चुके हैं। पिता प्रेम सिंह चौहान हैं, तो माता का नाम सुंदर बाई चौहान है। साधना सिंह से उनका विवाह हुआ है। उनके दो पुत्र कार्तिकेय चौहान, कुणाल चौहान हैं।

राजनीति से पहले आरएसएस में थे सक्रिय

गौरतलब है कि राजनीति में कदम रखने पहले शिवराज सिंह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) में कार्यकर्ता के रूप में कार्य किया था। शिवराज सिंह चौहान छह बार उस सीट से सांसद हैं, जहां से कभी पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी सांसद थे। प्रदेश में मुख्यमंत्री पद का दायित्व संभालने से पहले शिवराज पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष और भाजयुमो के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी रह चुके हैं। शिवराज सिंह चौहान को जमीन से जुड़ा हुआ नेता माना जाता है। शिवराज का राजनीतिक अनुभव भी सबसे जुदा रहा है। शिवराज सिंह चौहान ने 1972 में ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को ज्वाइन कर लिया था और 1975 में मॉडल हायर सेकेंडरी स्कूल छात्र संघ के अध्यक्ष चुने गए थे।

उत्तराखंड से अजय टम्टा हुए मोदी कैबिनेट में शामिल, अल्मोड़ा में जश्न में डूबे भाजपा कार्यकर्ता

अल्मोड़ाः मोदी के तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने और अल्मोड़ा संसदीय सीट से सांसद अजय टम्टा को एनडीए सरकार में मंत्रीमंडल में जगह मिलने पर भाजपा कार्यकर्ताओं में खुशी की लहर है। रविवार की देर शाम भाजपा कार्यकर्ताओं ने शहीद तिराहे में जमकर जश्न मनाया।

सांसद अजय टम्टा ने लगातार तीसर बार रिकार्ड मतों से संसदीय सीट अल्मोड़ा में जीत हासिल की। जिसके बाद उन्हें अब मंत्रीमंडल में शामिल कर लिया गया है। मंत्रीमंडल में शामिल होने से भाजपाई गदगद दिखाई दिए। देर शाम कार्यकर्ता शहीद तिराहे पर एकत्र हुए। ढोल नगाड़े बजाकर खुशी मनाई।

आतिशबाजी और मिठाई खिलाकर एक दूसरे को बधाई दी। यहां प्रदेश उपाध्यक्ष कैलाश शर्मा, जिलाध्यक्ष रमेश बहुगुणा, किरन पंत, अमित शाह मोनू, गिरीश खोलिया, दर्शन रावत, धर्मेंद्र बिष्ट, कैलाश गुरुरानी, राजीव गुरुरानी, संजय जोशी, अरविंद बिष्ट, गोविंद पिलख्वाल, संजय सिंह बिष्ट, जगत तिवारी, राजेंद्र बिष्ट, जागेश्वर विधायक मोहन सिंह मेहरा, चंदन बहुगुणा आदि मौजूद रहे।

गरुड़ में कार्यकर्ताओं ने की आतिशबाजी

बागेश्वर, गरुड़ः नरेंद्र मोदी के तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने व अल्मोड़ा–पिथौरागढ़ लोकसभा सीट से सांसद बने अजय टम्टा को मंत्री मंडल में शामिल किए जाने पर भाजपा कार्यकर्ताओं ने जश्न मनाया। आतिशबाजी की और मिष्ठान्न वितरण किया। वक्ताओं ने कहा कि पीएम मोदी ने विश्व में देश का मान बढ़ाया है। इसलिए देश की जनता ने उन्हें तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाया है।

गजेंद्र सिंह शेखावत को मिली मोदी 3.0 की टीम में जगह

नई दिल्ली। भाजपा नेता गजेंद्र सिंह शेखावत ने रविवार को प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नरेंद्र मोदी को लगातार तीसरी बार मंत्रिपरिषद में शामिल करने के लिए धन्यवाद दिया। मोदी रविवार को अपने मंत्रिपरिषद के सदस्यों के साथ लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेंगे। शेखावत ने संवाददाताओं से कहा कि वह मोदी के नेतृत्व में एक टीम के हिस्से के रूप में काम करेंगे और सभी वादों को पूरा करेंगे और देश की उम्मीदों और आकांक्षाओं पर खरा उतरेंगे।

उन्होंने संवाददाताओं से कहा, "प्रधानमंत्री ने मुझे लगातार तीसरी बार अपनी टीम में शामिल करके देश की सेवा करने का अवसर दिया है। हम प्रधानमंत्री के नेतृत्व में एक टीम के रूप में काम करेंगे और सभी वादों को पूरा करेंगे और देश की उम्मीदों और आकांक्षाओं पर खरा उतरेंगे।"

तीसरी बार मौका देने के लिए मोदी को दिया धन्यवाद

केंद्रीय जल शक्ति मंत्री और केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री के रूप में कार्य कर चुके शेखावत ने तीसरी बार मौका देने के लिए मोदी को धन्यवाद दिया। बता दें कि शेखावत जोधपुर से लोकसभा के लिए चुने गए थे।

मोदी 3.0 कैबिनेट में बंदी संजय का नाम आने से परिवार खुश

हैदराबाद। भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव बंदी संजय कुमार के केंद्रीय मंत्रिपरिषद में शामिल होने की खबरों के बीच उनके परिवार ने खुशी जाहिर की है।

साथ ही परिवार ने भाजपा पार्टी के नेताओं और कार्यकर्ताओं को धन्यवाद दिया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज (रविवार) अपने मंत्रिपरिषद के सदस्यों के साथ लगातार तीसरी बार शपथ लेंगे।

कुमार के करीमनगर स्थित आवास पर पत्रकारों से बात करते हुए उनकी पत्नी अपर्णा ने कहा कि यह उनके जीवन का सबसे अच्छा पल होगा। उन्होंने कहा, "हम सभी बहुत खुश हैं और सभी का शुक्रिया अदा करते हैं। हम भाजपा पार्टी के नेताओं और कार्यकर्ताओं का शुक्रिया अदा करते हैं।

सभी की कड़ी मेहनत और प्रार्थनाओं के कारण ही हम यहां हैं। माता रानी के आशीर्वाद से ही हम यह दिन देख रहे हैं। हम इस दिन को पाकर बहुत धन्य हैं। मुझे लगता है कि यह हमारे जीवन का सबसे अच्छा पल है।"

मोदी ने 24 लाख छात्रों का दिल तोड़ाः राहुल गांधी

राष्ट्रीय पात्रता व प्रवेश परीक्षा नीट में धांधली का लगाया आरोप

नईदिल्ली, राष्ट्रीय पात्रता व प्रवेश परीक्षा रिजल्ट (नीट रिजल्ट 2024) जारी होने के बाद से स्टूडेंट्स, पैरेंट्स और कोचिंग टीचर्स नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) पर कई आरोप लगा रहे हैं.

कई मामलों में नीट रिजल्ट में गड़बड़ी की आशंका जताई जा रही है जिसमें पेपर लीक की आशंका, पहली बार इतनी ज्यादा संख्या में स्टूडेंट्स का टॉप करना, बिना नोटिफिकेशन ग्रेस मार्क्स देना, मार्क्स और रैंक में गड़बड़ी आदि शामिल हैं. हालांकि एनटीए ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट के जरिये इनके पीछे की वजह बताई है लेकिन स्टूडेंट्स और एक्सपर्ट्स उससे संतुष्ट नहीं है.

इस मामले को लेकर कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने मोदी सरकार पर नशाना साधा है. उन्होंने एक्स पर कहा– नरेंद्र मोदी ने अभी शपथ भी नहीं ली है और नीट परीक्षा में हुई धांधली ने 24 लाख से अधिक स्टूडेंट्स और उनके परिवारों को तोड़ दिया है. एक ही एग्जाम सेंटर से 6 छात्र मैक्सिमम मार्क्स के साथ टॉप कर जाते हैं, कितनों को ऐसे मार्क्स मिलते हैं जो टेक्निकली संभव ही नहीं है, लेकिन सरकार लगातार पेपर लीक की संभावना को नकार रही है.

राहुल ने आगे कहा– शिक्षा माफिया और सरकारी तंत्र की मिलीभगत से चल रहे इस ह्यपेपर लीक उद्योगह्न से निपटने के लिए ही कांग्रेस ने एक रोबस्ट प्लान बनाया था. हमने अपने मैनिफेस्टो में कानून बना कर छात्रों को ह्यपेपर लीक से मुक्तिह्न दिलाने का संकल्प लिया था. आज मैं देश के सभी स्टूडेंट्स को विश्वास दिलाता हूं कि मैं संसद में आपकी आवाज़ बन कर आपके भविष्य से जुड़े मुद्दों को मज़बूती से उठाऊंगा. युवाओं ने इंडिया पर भरोसा जताया है – इंडिया उनकी आवाज़ को दबने नहीं देगा.वहीं इस माले पर एनटीए निदेशक सफाई देते हुए कहा कि हमने सभी चीजों का सावधानीपूर्वक विश्लेषण किया है और परिणाम जारी किए हैं. 4750 केंद्रों में से यह समस्या 6 केंद्रों तक सीमित थी. और 24 लाख छात्रों में से केवल 1600 छात्रों को इस समस्या का सामना करना पड़ा. पूरे देश में इस परीक्षा की अखंडता से समझौता नहीं किया गया. कोई पेपर लीक नहीं हुआ. पूरी परीक्षा प्रक्रिया बहुत पारदर्शी रही है.

हरियाणा से पानी नहीं छोड़ा गया तो एक–दो दिन में दिल्ली में होगा बड़ा जल संकटः आतिशी

नई दिल्ली,दिल्ली की जल मंत्री आतिशी ने हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह को एक बार फिर पत्र लिखकर कहा है कि यदि पड़ोसी राज्य दिल्ली के लिए अतिरिक्त पानी नहीं छोड़ता है तो राष्ट्रीय राजधानी को अगले एक–दो दिन में बड़े जल संकट का सामना करना पड़ेगा। आतिशी ने पत्र में लिखा, पिछले कुछ दिनों से हरियाणा मुनक नहर में पर्याप्त पानी नहीं छोड़ रहा है। इसके परिणाम स्वरूप राष्ट्रीय राजधाना के लोगों को अनुचित कष्ट उठाना पड़ रहा है। पत्र में कहा गया है कि मई 2018 में अपर यमुना रिवर बोर्ड की 53वीं बैठक में हुए समझौते के अनुसार, मुंडक नहर के जरिये दिल्ली को 1,050 क्यूसेक (56.8 करोड़ गैलन प्रतिदिन) पानी दिया जाना था। रास्ते में पानी के नुकसान को देखते हुए 1,013 क्यूसेक (54.8 करोड़ गैलन प्रतिदिन) पानी दिल्ली पहुंचना चाहिये। मंत्री ने अपने पत्र में लिखा कि दिल्ली के बवाना में, जहां मुंडक नहर का पानी केंद्रशासित प्रदेश में प्रवेश करता है, इसकी मात्रा मापी गई थी। अपर यमुना रिवर बोर्ड के प्रतिनिधियों ने पिछले सप्ताह इन फ्लो मीटरों की जांच की थी। गर्मी के समय में भी बवाना में दिल्ली को मिलने वाले पानी की औसत मात्रा 980 से 1,030 क्यूसेक के बीच होती है। लेकिन इस बार इसकी मात्रा 840 क्यूसेक तक घट गई है। उन्होंने बताया कि इतनी कम मात्रा में पानी मिलने से दिल्ली के सात जल शोधन संयंत्र यहां के लोगों के लिए प्रयाप्त मात्रा में जल शोधन करने में समर्थ नहीं हैं।

उन्होंने कहा कि यदि हरियाणा आज ही पर्याप्त मात्रा में पानी नहीं छोड़ता है तो अगले एक–दो दिन में दिल्ली में बड़ा जल संकट होगा।

मुंबई एयरपोर्ट पर एक ही रनवे पर दो विमान! एक लैंडिंग तो दूसरा उडने के लिए था तैयार

मुंबई,। मुंबई हवाई अड्डे पर इंडिगो विमान के उतरने के एक मिनट से भी कम समय में एयर इंडिया का एक विमान उसी हवाई पट्टी से उड़ान भरने लगा. अधिकारियों ने रविवार को कहा कि मामले की जांच नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) कर रहा है. उन्होंने कहा कि डीजीसीए ने शनिवार को घटना के समय ड्यूटी पर मौजूद एयर ट्रैफिक कंट्रोलर (एटीसी) को निलंबित कर दिया है, जबकि इंडिगो ने मामले की जांच शुरू कर दी है. एक ही रनवे पर एक विमान के उतरने और दूसरे विमान के उड़ान भरने का कथित वीडियो सोशल मीडिया पर साझा किया गया है. डीजीसीए के एक अधिकारी ने कहा, हम जांच कर रहे हैं और घटना में शामिल एटीसीओ को पहले ही ड्यूटी से हटा दिया गया है. मुंबई हवाई अड्डा एकल रनवे पर संचालित होता है, जिसमें दो क्रॉसिंग रनवे हैं.

पर्यटकों की भीड़ के आगे व्यवस्थाएं धड़ाम, 20 हजार से अधिक सैलानी पहुंचे

नैनीतालः ग्रीष्मकालीन पर्यटन सीजन का चरम और शनिवार को वीकेंड पर पर्यटक वाहनों के दबाव से एक बार फिर यातायात व्यवस्था चरमरा गई। नैनीताल व कैंची धाम में उमड़ी पर्यटकों की संख्या के आगे सारे इंतजाम ध्वस्त हो गए। सड़कों पर वाहनों का रेला रहा।

जाम की वजह से गाड़ियां रेंगकर चलती रही। हालांकि नैनीताल में एंट्री प्वाइंट पर ही वाहनों को रोक दिया गया था, मगर जाम का झाम बरकरार रहा। कैंची के लिए शटल सेवा तो चली, फिर भी गाड़ियों के दबाव से अल्मोड़ा–हल्द्वानी हाईवे हांफ गया। दिनभर में करीब 20 हजार से अधिक सैलानी नैनीताल पहुंचे।

शटल वाहनों के लिए लंबा इंतजार

नैनीताल में पुलिस ने सुबह से विशेष यातायात प्लान लागू कर दिया था। भवाली से आने वाले वाहनों के लिए मस्जिद तिराहा, हल्द्वानी से आने वाले वाहनों के लिए रूसी व कालाढूंगी से आने वाले वाहनों को नारायण नगर में रोका गया। जहां से पार्किंग वाले होटलों में एडवांस बुकिंग कराकर आ रहे पर्यटक वाहनों को ही एंट्री दी गई। शेष पर्यटकों को शटल सेवा से शहर तक भेजा गया। इसके बावजूद एंट्री प्वाइंट में जाम की स्थित बन गई। नारायण नगर से सरिताताल तक जाम रहा। यही हाल हल्द्वानी मार्ग का भी रहा। शटल के लिए टैक्सी वह रोडवेज की बसें लगाई गई थी। मगर शहर के भीतर जाम होने के कारण शटल वाहनों को भी चक्कर लगाने में लंबा समय लगा। जिस कारण पर्यटक एंट्री प्वाइंट पर इंतजार करते रहे।

संपादकीय

उत्तराखंड पर फिर विश्वास

देश की नई सरकार का रास्ता साफ हो गया है और प्रधानमंत्री के तौर पर नरेंद्र मोदी अपनी तीसरी पारी शुरू कर रहे हैं। निश्चित तौर पर इस बार बहुमत न होने के बाद सरकार बनाने को लेकर सवाल भी उठ रहे थे लेकिन एनडीए के सभी घटक दलों ने एक सुर में भारतीय जनता पार्टी को सबसे बड़ी पार्टी के रूप में मानते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को संसदीय दल का नेता चुना। मोदी केबिनेट का शपथ ग्रहण समारोह भी संपन्न हो गया है जिसमें कश्मीर से कन्याकुमारी, कैबिनेट मंत्री से लेकर राज्य मंत्रियों तक एक संतुलन बनाने की कोशिश की गई है। उत्तराखंड के लिए भी मोदी मंत्रिमंडल एक सुखद अवसर लेकर आया है जिसके तहत इस बार अल्मोड़ा –पिथौरागढ़ संसदीय सीट से तीसरी बार चुन कर आए अजय टमटा को मंत्रिमंडल में स्थान दिया गया है। हालांकि संभावनाएं इससे पूर्व यह लगाई जा रही थी कि शायद गठबंधन की सरकार होने के कारण उत्तराखंड को मोदी मंत्रिमंडल में इस बार स्थान न मिल पाए लेकिन सर्वविदित है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का उत्तराखंड से हमेशा से ही एक खास लगाव रहा है। इससे पूर्व अजय भट्ट को भी मंत्रिमंडल में जगह दी गई थी जबकि उनसे पूर्व भी उत्तराखंड के कई नेता महत्वपूर्ण पदों पर केंद्रीय मंत्रिमंडल में शामिल रहे हैं। इस बार अजय टमटा को प्रतिनिधिमंडल में स्थान मिलना काफी अप्रत्याशित रहा क्योंकि चर्चाएं पौड़ी लोकसभा सीट से जीते अनिल बलूनी को लेकर जोरों पर थी और उन्हें राजनाथ सिंह का काफी करीब भी भी माना जाता था। बावजूद उसके उत्तराखंड को ऐसे मंत्रिमंडल में जिसमें पहले ही सरकार गठबंधन के भरोसे पर है स्थान मिलना काफी महत्वपूर्ण माना जा रहा है। उत्तराखंड में तीसरी बार पांच कमल खिलाने वाले उत्तराखंड को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का इसे उत्तराखंड वासियों के लिए एक तोहफा ही माना जा सकता है। 2017 में इससे पूर्व भी मोदी मंत्रिमंडल में अजय टम्टा को कपड़ा राज्यमंत्री बनाया गया था। चारों सांसदों को पीछे छोड़ लोकसभा चुनाव में अल्मोड़ा सीट पर शानदार प्रदर्शन करने के साथ–साथ टम्टा को क्षेत्रीय और जातीय समीकरणों का लाभ भी मिला है। यहां निश्चित तौर पर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता, क्योंकि न केवल उनके नेतृत्व में इस बार उत्तराखंड में पांचो लोकसभा सीट जीतने की हैट्रिक बनाई गई है बल्कि अधिकांश विधानसभा में भाजपा का वोट प्रतिशत भी बढ़ा है। उत्तराखंड को मोदी मंत्रिमंडल में स्थान मिलना मुख्यमंत्री धामी के कद को भी उंचा कर रहा है, जो यह साफ दर्शाता है कि केंद्रीय नेतृत्व एवं संगठन उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के कार्य से प्रभावित है।

नतीजा सबसे बड़ा झटका

भाजपा भले ही तमिलनाडु से बहुत उम्मीद कर रही थी, लेकिन वहां भी उसे 2014 की तरह महज एक सीट पर ही जीत मिलती नजर आ रही है। भाजपा को महाराष्ट्र में भी बड़ा नुकसान हुआ है। पिछली बार पार्टी के यहां से 22 सांसद जीते थे। लेकिन इस बार उसकी सीटें आधी रह गई हैं। एनसीपी से अलग होकर भाजपा का साथ देने वाले अजित पवार को महज एक ही सीटें मिलती नजर आ रही हैं। कुल मिला कर कहा जा सकता है कि भाजपा को उत्तर प्रदेश, राजस्थान, पश्चिम बंगाल, बिहार और हरियाणा से बड़ा झटका लगा है। हालांकि पार्टी को सबसे ज्यादा समर्थन मध्य प्रदेश से मिला है। गुजरात में भी उसका गढ़ बचा हुआ है। असम, अरुणाचल प्रदेश, उत्तराखंड और हिमाचल में भी उसका जादू चल रहा है। सवाल यह है कि आखिर, भाजपा उत्तर प्रदेश में क्यों कमजोर हो गई? फौरी तौर पर देखें तो सबसे बड़ा कारण यहां के युवाओं के गुस्से को बड़ा कारण माना जा रहा है। राज्य में बार–बार परीक्षाओं के पेपर आउट होते रहे। इससे युवाओं में गुस्सा रहा। इसकी वजह से उनकी नौकरियां लगातार दूर जाती रहीं। अग्निवीर योजना को लेकर विपक्षी दलों विशेषकर कांग्रेस नेता राहुल गांधी और सपा नेता अखिलेश यादव ने जिस तरह मुद्दा बनाया, उसने युवाओं में भाजपा के खिलाफ गुस्सा भर दिया। राम मंदिर के निर्माण के बाद समूचा देश जिस तरह राममय हुआ था, उससे भाजपा को उम्मीद थी कि पार्टी को रामभक्तों का बहुत साथ मिलेगा। लेकिन उत्तर प्रदेश में ही राम की लहर नहीं चल पाई।

उमेश चतुर्वेदी

अठारहवीं लोक सभा चुनावों में भाजपा भले ही सबसे बड़ी पार्टी बन कर उभरी हो, लेकिन मोटे तौर पर देखें तो यह नतीजा उसके लिए सबसे बड़ा झटका ही माना जाएगा।

2014 में जब पार्टी 283 सीटों के साथ अपने दम पर बहुमत हासिल करके सत्ता में आई थी, तब कहा गया था कि देश का मतदाता प्रबुद्ध हो गया है। उसे अस्थिर सरकारें मंजूर नहीं हैं। 2019 के आम चुनाव ने इसी धारणा को आगे बढ़ाया और ब्रांड मोदी का नाम स्थापित हो गया, लेकिन 2024 में स्थितियां बदली हुई हैं। ये पंक्तियां लिखी जाते वक्त तक भाजपा अपने दम पर ढाई सौ का आंकड़ा भी पार करती नहीं दिख रही है। ऐसे में सवाल उठेंगे कि भारतीय जनता पार्टी कहां चूकी?

भाजपा को सबसे ज्यादा उम्मीद जिस उत्तर प्रदेश से रही है, वहां पार्टी को सीटों का सबसे ज्यादा नुकसान है। बिहार में भी वह सबसे बड़ा दल होती थी, लेकिन इस बार उसे जनता दल (यू) मात देता नजर आ रहा है। वह आगे निकल गया है। पश्चिम बंगाल में उसे बड़ी जीत की उम्मीद थी, तकरीबन सारे एक्जिट पोल ऐसी ही उम्मीद जता रहे थे, लेकिन वैसा नहीं हुआ। उलटे उसकी सीटें भी घट गई। राजस्थान में भी पार्टी बेहतर प्रदर्शन नहीं कर पा रही है। राज्य की आधी सीटों पर ही जीत हासिल होती नजर आ रही है। पार्टी को हरियाणा में भी झटका लगा है। लेकिन प्रज्वल रेवन्ना कांड के बाद जिस कर्नाटक से उसे सबसे ज्यादा झटके की उम्मीद थी, वहां से उसे उतना नुकसान नहीं हुआ है।भाजपा भले ही तमिलनाडु से बहुत उम्मीद कर रही थी, लेकिन वहां भी उसे 2014 की तरह महज एक सीट पर ही जीत मिलती नजर आ रही है। भाजपा को महाराष्ट्र में भी बड़ा नुकसान हुआ है। पिछली बार पार्टी के यहां से 22 सांसद जीते थे। लेकिन इस बार उसकी सीटें आधी रह गई हैं। एनसीपी से अलग होकर भाजपा का साथ देने वाले अजित पवार को महज एक ही सीटें मिलती नजर आ रही हैं। कुल मिला कर कहा जा सकता है कि भाजपा को उत्तर प्रदेश, राजस्थान, पश्चिम बंगाल, बिहार और हरियाणा से बड़ा झटका लगा है। हालांकि पार्टी को सबसे ज्यादा समर्थन मध्य प्रदेश से मिला है। गुजरात में भी उसका गढ़ बचा हुआ है। असम, अरुणाचल प्रदेश, उत्तराखंड और हिमाचल में भी उसका जादू चल रहा है। सवाल यह है कि आखिर, भाजपा उत्तर प्रदेश में क्यों कमजोर हो गई? फौरी तौर पर देखें तो सबसे बड़ा कारण यहां के युवाओं के गुस्से को बड़ा कारण माना जा रहा है। राज्य में बार–बार परीक्षाओं के पेपर आउट होते रहे। इससे युवाओं में गुस्सा रहा। इसकी वजह से उनकी नौकरियां लगातार दूर जाती रहीं। अग्निवीर योजना को लेकर विपक्षी दलों विशेषकर कांग्रेस नेता राहुल गांधी और सपा नेता अखिलेश यादव ने जिस तरह मुद्दा बनाया, उसने युवाओं में भाजपा के खिलाफ गुस्सा भर दिया। राम मंदिर के निर्माण के बाद समूचा देश जिस तरह राममय हुआ था, उससे भाजपा को उम्मीद थी कि पार्टी को रामभक्तों का बहुत साथ मिलेगा। लेकिन उत्तर प्रदेश में ही राम की लहर नहीं चल पाई।उत्तर प्रदेश में भाजपा की मौजूदा हालात के चलते 1999 का आम चुनाव याद आ रहा है। तब उत्तराखंड भी उत्तर प्रदेश का हिस्सा था, इस लिहाज से उत्तर प्रदेश में लोक सभा की 85 सीटें थीं। 1998 के आम चुनावों में भाजपा को राज्य से 52 सीटें मिली थीं। लेकिन बाद में कल्याण सिंह ने बागी रुख अपना लिया तो अगले ही साल हुए आम चुनावों में भाजपा की 23 सीटें घट गई।कुछ ऐसी ही स्थिति इस बार भाजपा की उत्तर प्रदेश में होती दिख रही है। पार्टी अपना आकलन तो करेगी, लेकिन मोटे तौर पर माना जा रहा है कि भाजपा को राज्य में सबसे ज्यादा नुकसान युवाओं के गुस्से, राज्य सरकार के स्थानीय स्तर पर भ्रष्टाचार ना रोक पाने और गलत उम्मीदवार देने की वजह से हुआ। उदाहरण के लिए बलिया से नीरज शेखर की उम्मीदवारी पर पार्टी के ही लोगों को सबसे ज्यादा ऐतराज रहा। खुद प्रधानमंत्री मोदी भी डाक मतमत्रों में छह हजार से ज्यादा वोटों से पीछे चलते रहे, इसका मतलब साफ है कि भाजपा को लेकर राज्य में एक तरह से गुस्सा था, जिसे भांपने में पार्टी नाकाम रही।

बिहार के बारे में माना जा रहा था कि नीतीश को नुकसान होगा लेकिन इसके ठीक उलट नीतीश अपनी ताकत बचाए रखने में कामयाब हुए हैं। राज्य में अब जनता दल सबसे बड़ा संसदीय दल है। तो क्या यह मान लिया जाए कि 2020 के विधानसभा चुनावों में कमजोर किए जाने की कथित कोशिश को पलट दिया है? पार्टी को महाराष्ट्र में शायद अजीत पवार को साथ लाना उसके वोटरों को पसंद नहीं आया। भाजपा ही उन्हें राज्य की सिंचाई घोटाले का आरोपी मानती रही और उन्हें ही उपमुख्यमंत्री बनाकर ले आई। जब कोई विपक्षी व्यक्ति पार्टी या गठबंधन में लाया जाता है, तो सबसे ज्यादा जमीनी कार्यकर्ता को परेशानी होती है। वह पसोपेश में पड़ जाता है कि कल तक वह अपनी पार्टी लाइन के लिहाज से जिसका विरोध करता रहा, उसका अब कैसे समर्थन करेगा। महाराष्ट्र का कार्यकर्ता इसीलिए निराश रहा। जिसका असर चुनावी नतीजों पर दिख रहा है।

हरियाणा के प्रभुत्वशाली जाट मतदाताओं को सबसे ज्यादा गुस्सा अग्निवीर और शासन में उसकी घटती भागीदारी को लेकर रहा। इसकी वजह से यहां का अधिसंख्य मतदाता पार्टी से रुष्ट हुआ और नतीजा सामने है। राजस्थान में भाजपा का कार्यकर्ता ही मुख्यमंत्री भजनलाल को स्वीकार नहीं कर पा रहा है। पार्टी की दिग्गज नेता वसुंधरा को किनारे लगाया जाना भी भाजपा की अंदरूनी राजनीति पर असर डाला। इसका असर है कि पार्टी राज्य में अपेक्षित प्रदर्शन नहीं कर पाई। पश्चिम बंगाल में ममता अपने किले को बचाने में कामयाब रहीं। हालांकि ओडिशा में पार्टी का जबरदस्त प्रदर्शन रहा जहां राज्य सरकार के साथ ही संसद की ज्यादातर सीटों पर वह काबिज हो चुकी है।

इस चुनाव ने यह भी संदेश दिया है कि गठबंधन की राजनीति खत्म नहीं हुई है। दो कार्यकाल में अपने दम पर बहुमत हासिल करने के चलते मोदी–शाह की जोड़ी लगातार अपने एजेंडे को लागू करती रही लेकिन अब गठबंधन की सरकार होगी, इसलिए अब इस जोड़ी को पहले के दो कार्यकाल की तरह काम करना आसान नहीं होगा। एक धारणा यह भी बन गई थी कि जिस संगठन के चलते भाजपा की पहचान थी, वह धीरे–धीरे किनारे होता चला गया। लेकिन बहुमत न हासिल होने की स्थिति में अब संगठन की अहमियत बढ़ेगी। इस चुनाव का संदेश यह भी है कि संगठन को जमीनी लोगों पर भरोसा करना होगा। भाजपा के लिए राहत की बात यह है कि तीसरी बार वह सत्ता पर काबिज होगी। उसने उन राज्यों में भी अपनी उपस्थिति बनाने में कामयाबी हासिल की है, जहां वह नहीं थी।

सुधारात्मक कदम उठाने की जरूरत

सतीश सिंह

भले ही भारत दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है और तेजी से दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में अग्रसर है, लेकिन अभी तक भारत में गुणवत्तायुक्त उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पर्याप्त विकल्प एवं अवसर उपलब्ध नहीं हैं।

यही वजह है कि यहां के छात्र विदेश पढने जाते हैं। हालांकि ये छात्र वहां पढ़ाई के क्षेत्र में दुश्वियों से ज्यादा अपनी जान को लेकर ज्यादा चिंतित हैं। दरअसल, कई मुल्कों में भारतीय छात्रों पर जानलेवा हमले की संख्या बढ़ी है।

बहरहाल, आज देशभर में 1000 से अधिक विविद्यालय और 42,000 से अधिक कॉलेज उच्च शिक्षा प्रदान करने का काम कर रहे हैं, लेकिन इनके पास अभी भी पर्याप्त पूंजी, कुशल शिक्षक और आधारभूत संरचना की कमी है। भारत का कोई कॉलेज या विविद्यालय आज भी दुनिया में शीर्ष 10 स्थानों पर काबिज नहीं है। भारत में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर सुधार के बावजूद सबसे बड़ी चुनौती है छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना, जिसे बुनियादी सुविधाओं, कुशल शिक्षक और पूंजी उपलब्ध कराकर प्रदान किया जा सकता है। विदेश में बड़ी संख्या में छात्रों द्वारा शिक्षा ग्रहण के कारण भारत से पूंजी का बहाव विदेशों में हो रहा है और साथ में प्रतिभा का पलायन भी हो रहा है। विदेश मंत्रालय के अनुसार जनवरी 2023 तक 15 लाख भारतीय छात्र विदेशों में पढ़ाई कर रहे थे, जबकि 2022 में यह संख्या 13 लाख थी और 2024 में इस संख्या के 24 लाख पहुंचने की संभावना है।

2020 से 2021 के दौरान विदेशों में शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों की संख्या में 50 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई। भारत के टियर 2 और टियर 3 शहरों से ज्यादा बच्चे विदेश में शिक्षा ग्रहण करने जा रहे हैं, जिसका कारण सामाजिक स्टेटस सिंबल और विदेश में रहने की ललक है। विदेश में पढ़ाई करने वाले छात्रों में से 20 प्रतिशत छात्र ही अपनी पढ़ाई पूरी करके विदेश से भारत वापिस लौटना चाहते हैं, जबकि 80 प्रतिशत छात्र वहीं बसना चाहते हैं। विदेशों में शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों में 35 प्रतिशत छात्र अमेरिका में शिक्षा हासिल कर रहे हैं।

आज अमेरिका के शिक्षण संस्थानों में हर 4 छात्रों में से 1 छात्र भारतीय मूल का है। 2024 में ये छात्र विदेशों में 75 से 85 अरब डॉलर रुपए खर्च कर सकते हैं। भारतीय रिजर्व बैंक के अनुसार वित्त वर्ष 2021–22 में विदेशी मुद्रा में 5 अरब रुपए खर्च किए गए। कोरोना महामारी के शुरू होने से पहले विदेशों में अध्ययनरत छात्र विदेश की अर्थव्यवस्थाओं में 24 बिलियन डॉलर का व्यय किए थे, जो भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का 1 प्रतिशत था। 2024 में इस राशि के बढक़र 80 बिलियन डॉलर होने का अनुमान है। अगर भारतीय छात्र विदेश पढ़ाई करने नहीं जाते तो विदेशी मुद्रा का इस्तेमाल आयात की जरूरत को पूरी करने में किया जाता, देश में आर्थिक गतिविधियों में तेजी आती, अर्थव्यवस्था में मजबूती आती, देश की शिक्षा व्यवस्था मजबूत होती, देश की प्रतिभा का इस्तेमाल देश में किया जाता आदि।

आंकड़ों के अनुसार चीन के बाद भारत से सबसे अधिक छात्र विदेश पढने जाते हैं। भारतीय छात्र उच्च शिक्षा जैसे, मेडिकल, इंजीनियरिंग, व्यवसाय प्रबंधन में डिग्री एवं डिप्लोमा हासिल करने के लिए चीन, जापान, दक्षिण कोरिया, यूक्रेन, रूस, आस्ट्रेलिया, इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, अमेरिका आदि देश जा रहे हैं। मेडिकल की डिग्री हासिल करने के लिए भारतीय छात्र लगभग 3 दशकों से रूस, चीन, यूक्रेन, किर्गिस्तान, कजाकिस्तान, फिलीपींस आदि देश जा रहे हैं, क्योंकि भारत में मेडिकल सीट कम होने की वजह से यहां मेडिकल की पढ़ाई बहुत ही महंगी है।

राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग के अनुसार वित्त वर्ष 2021–22 में देशभर में महज 596 मेडिकल कॉलेज थे, जहां कुल मेडिकल सीटों की संख्या महज 88,120 थी। हालांकि, इंजीनियरिंग की पढाई करने के लिए विदेश जाने के दृष्टान्त कम हैं।

केंद्र में गठबंधन सरकार

चूंकि लोकसभा चुनाव परिणाम में कोई भी पार्टी बहुमत का जादुई आंकड़ा नहीं छू सकी है, इसलिए इतना तय है कि केंद्र में गठबंधन सरकार होगी।

बेशक, भाजपा 240 सीट जीतकर सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी है, लेकिन बहुमत के आंकड़े 272 से यह संख्या काफी कम है। हालांकि भाजपा नीत गठबंधन की सीटों की संख्या 292 है, जबकि विपक्षी इंडिया गठबंधन के पास 233 सीटें हैं। इसलिए गठबंधन सरकार बनाने की कवायद दोनों तरफ से तेज हो गई है। साफ है कि सरकार बनाने में जदयू और तेलुगू देशम की भूमिका महत्त्वपूर्ण होगी। ये दोनों अभी भाजपा के सहयोगी दल हैं।

जदयू भाजपा नीत एनडीए गठबंधन के महत्त्वपूर्ण घटक है, लेकिन ह्यइंडियाह्न गठबंधन के नेता दोनों दलों से संपर्क साधने में जुट गए हैं। इसलिए कि उन्हें लगता है कि इन दलों और भाजपा का सहयोग–साथ स्वाभाविक नहीं है, और भाजपा के साथ इन दलों के नेता सहज महसूस नहीं करते। जदयू के नेता नीतीश कुमार और तेलुगू देशम के नेता चंद्रबाबू नायडू के साथ ही रालोद मुखिया जयंत चौधरी, लोक जनशक्ति पार्टी के चिराग पासवान समेत छोटे दलों पर भी ह्यइंडियाह्न गठबंधन के नेताओं की नजर है।

नीतीश कुमार से मल्लिकार्जुन खरगे, शरद पवार जैसे ह्यइंडियाह्न गठबंधन के बड़े नेताओं को खास उम्मीद है क्योंकि इस गठबंधन के शिल्पकार नीतीश ही थे। बाद में घटनाक्रम ऐसा रहा कि वे स्वयं को इंडिया गठबंधन में ह्यउपेक्षितह्न महसूस करने लगे और अपने समर्थकों के साथ भाजपा नीत एनडीए का हिस्सा बन गए। लेकिन राजनीतिक परिदृश्य पूरी तरह बदल चुका है। तेलुगू देशम के चंद्रबाबू नायडू से भी ह्यइंडियाह्न गठबंधन को खासी उम्मीद है।

दोनों नेता, हालांकि बाकायदा भाजपा के साथ हैं, लेकिन जिसके भी साथ होंगे सत्ता का पलड़ा उसके पक्ष में झुकाने में कारगर भूमिका निभा सकते हैं। वैसे अभी कुछ भी कहना जल्दबाजी होगी क्योंकि किसी तरफ के घटक दल को अपने साथ ले आना इतना आसान नहीं होता।

राघव लॉरेंस ने किया कंचना के चौथे भाग का ऐलान, पहला पोस्टर भी आया सामने

राघव लॉरेंस के निर्देशन में बनी सुपरहिट फिल्म कंचना तमिल सिनेमा की यादगार फिल्मों में से एक है।यह फिल्म साल 2011 में आई थी और इसे दर्शकों का भरपूर प्यार मिला।हॉरर और सस्पेंस से भरपूर फिल्म कंचना के अब तक तीन भाग आ चुके हैं और पिछले कुछ समय से दर्शक इस फिल्म की चौथी किस्त का इंतजार कर रहे थे, जो अब खत्म हो गया है।दरअसल, लॉरेंस ने कंचना 4 का ऐलान कर दिया है।

कंचना 4 का पहला पोस्टर भी सामने आ गया है, जिसमें बड़े–बड़े अक्षरों में तमिल भाषा में कंचना 4 लिखा है।इस फिल्म की कहानी खुद लॉरेंस ने लिखी है। कंचना 4 की शूटिंग सितंबर, 2024 में शुरू हो जाएगी।कंचना का दूसरा भाग 17 अप्रैल, 2015 को सिनेमाघरों में रिलीज हुआ था, वहीं कंचना 3 19 अप्रैल, 2019 को आया था। कंचना 4 का निर्देशन और निर्माण राघव लॉरेंस कर रहे हैं, फिलहाल वह अपनी आगामी फिल्म बेंज को लेकर व्यस्त चल रहे हैं। यह एक हॉरर थ्रिलर फिल्म है, जिसे मशहूर निर्देशक लोकेश कनगराज ने लिखा है। फिल्म का निर्देशन बक्कियाराज कन्नन कर रहे हैं। इस फिल्म के बाद वह कंचना 4 की शूटिंग शुरू करेंगे। अभिनेता को हॉरर फिल्मों में पसंद करने वाले फैंस के लिए यह डबल तोहफा होगा। वह एक के बाद एक लगातार दो हॉरर फिल्मों में नजर आने वाले हैं। कंचना को मुनि के नाम से भी जाना जाता है।

रवितेजा के भतीजे माधव स्टाटर पहली फिल्म मिस्टर इडियट का टीजऱ जारी

मास महाराज रवितेजा के भतीजे माधव अभिनीत फिल्म मिस्टर इडियट में नायिका के रूप में सिमरन शर्मा हैं। जेजेआर एंटरटेनमेंट्स और सुश्री यालामांची रानी के बैनर तले जेजेआर रविचंद द्वारा निर्मित, यह फिल्म गौरी रोनांकी द्वारा निर्देशित है, जिन्होंने पेली सांडा डी से व्यावसायिक सफलता हासिल की थी। आज रवितेजा ने सोशल मीडिया पर मिस्टर इडियट का टीजऱ जारी किया। टीजऱ में सत्या (सिमरन शर्मा द्वारा अभिनीत) का परिचय दिया गया है, जो ध्रुव फैशन डिजाइनिंग कॉलेज की एक शीर्ष छात्रा है, जो अपने अद्वितीय डिजाइन कौशल के लिए जानी जाती है। इस दौरान, हीरो (माधव) कॉलेज में प्रवेश करता है और सत्या को मल्टीपल कहकर चिढ़ाता है। टीजऱ दिलचस्प ढंग से दिखाता है कि कैसे उनकी उथल–पुथल भरी दोस्ती प्यार में बदल जाती है।

वेस्टइंडीज ने युगांडा को 134 रन से रौंदा

जॉर्जटाउन (गुयाना),टी20 विश्व कप 2024 के ग्रुप–सी के एक मैच में वेस्टइंडीज ने युगांडा को 134 रन से हराकर बड़ी जीत दर्ज की। बाएं हाथ के स्पिनर अकील हुसैन की फिरकी के आगे युगांडा के बल्लेबाज पूरी तरह लाचार नजर आए।

वेस्टइंडीज ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए जॉनसन चार्ल्स के 42 गेंदों पर 44 और आंद्रे रसेल के 17 गेंदों पर 30 रनों की बदौलत 20 ओवरों में 173/5 रन बनाए।

जवाब में युगांडा की टीम 12 ओवरों में मात्र 39 रन पर सिमट गई। युगांडा को कोई भी बल्लेबाज ज्यादा देर क्रीज पर नहीं टिक पाया। अकील हुसैन ने अपने स्पेल में मात्र 11 रन देकर पांच विकेट लिए।

अकील का पांच विकेट वेस्टइंडीज के लिए दूसरा सर्वश्रेष्ठ टी20 गेंदबाजी आंकड़ा और टी20 विश्व कप में छठा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। वेस्टइंडीज ने 173 रनों के लक्ष्य का बचाव करते हुए शुरू से ही युगांडा के बल्लेबाजों पर दबदबा बनाया। अकील हुसैन ने पावरप्ले के दौरान अपने तीन ओवरों में तीन विकेट लेकर आक्रमण की अगुआई की। रोमारियो शेफर्ड और रसेल ने भी विकेट लेकर योगदान दिया। अकील ने सातवें ओवर के दौरान अपने शानदार स्पेल में चौथा और पांचवां विकेट लिया। बता दें कि दो बार की चैंपियन वेस्टइंडीज ने टी20 वर्ल्ड कप की शानदार शुरुआत की है। टीम ने अपने पहले दोनों मैच जीते हैं। वेस्टइंडीज की टीम चार अंक लेकर अफगानिस्तान के बाद ग्रुप–सी में दूसरे स्थान पर है, जबकि युगांडा की टीम तीन मैचों में एक जीत और दो हार के साथ दो अंक लेकर तीसरे स्थान पर है।

बॉलीवुड में डेब्यू करना किसी सपने के सच होने जैसा है : निमृत कौर अहलूवालिया

थ्रिलर ड्रामा के साथ फिल्मों की दुनिया में कदम रखने के लिए पूरी तरह तैयार एक्ट्रेस निमृत कौर अहलूवालिया ने बताया कि फिल्म के लिए रोल पाना जबरदस्त एक्सपीरियंस था।

निमृत ने अपने एक्टिंग करियर की शुरुआत टीवी शो छोटी सरदारनी से की थी। वह कंट्रोवर्शियल रियलिटी शो बिग बॉस सीजन 16 में भी नजर आई थीं और फिलहाल वह खतरों के खिलाड़ी के 14वें सीजन के लिए रोमानिया रवाना हो गई हैं। उनकी अपकमिंग फिल्म, जिसका टाइटल अभी तय नहीं हुआ है, अजय राय के प्रोडक्शन हाउस, जार पिक्चर्स के बैनर तले बन रही है।

निमृत ने कहा, बिग बॉस सीजन 16 में अपनी जर्नी के बाद, मैं अपने एक्टिंग करियर में नए रास्ते तलाशने के लिए काफी एक्साइटेड हूं, और यह प्रोजेक्ट सही अवसर पेश करता है। ऐसी टैलेंटेड टीम और मशहूर डायरेक्टर के साथ काम करना वास्तव में एक सपने के सच होने जैसा है।

उन्होंने कहा, मेरे एजेंट ने अजय से मिलवाया और उन्होंने इस रोल के लिए मुझे चुना। कई राउंड ऑडिशन होने के बाद, उन्हें यकीन हो गया कि मैं उनकी फिल्म में बड़े पर्दे पर डेब्यू के लिए बिल्कुल सही हूं। फिल्म में रोल मिलना मेरे लिए खास एक्सपीरियंस है। अनटाइटल्ड थ्रिलर ड्रामा अलग सिनेमाई एक्सपीरियंस देता है। फिल्म की कहानी और कलाकारों के बारे में जानकारी अभी भी गुप्त रखी गयी है। इस प्रोजेक्ट की शूटिंग इस साल की तीसरी तिमाही में शुरू होने वाली है।

ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ हार से बढ़ीं इंग्लिश टीम की मुश्किलें

ब्रिजटाउन (बारबाडोस), सलामी बल्लेबाज डेविड वॉर्नर, ट्रेविस हेड और एडम जम्पा के शानदार प्रदर्शन की बदौलत टी20 विश्व कप 2024 के अहम मुक़ाबले में ऑस्ट्रेलिया ने वर्तमान चैंपियन इंग्लैंड को 36 रनों से पटखनी दे दी। ऑस्ट्रेलिया ने 20 ओवरों में 201/7 का विशाल स्कोर खड़ा किया और मौजूदा टूर्नामेंट में 200 रन का आंकड़ा पार करने वाली पहली टीम बन गई। इंग्लैंड इस स्कोर के जवाब में निर्धारित 20 ओवरों में 6 विकेट पर 165 रन ही बना पाई। ऑस्ट्रेलिया के 201 रनों के जवाब में इंग्लैंड ने आक्रमक शुरुआत की। जोस बटलर और फ़िल सॉल्ट ने इंग्लैंड को आक्रमक शुरुआत दिलाई, लेकिन एडम ज़म्पा ने मोर्चा संभालते ही इंग्लैंड को बैकफुट पर धकेल दिया। ज़म्पा ने इंग्लैंड के दोनों सेट ओपनरों सॉल्ट और बटलर के रूप में इंग्लैंड को जो झटके दिए उससे इंग्लैंड उबर ही नही पाया। ज़म्पा को प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया।

6 दिन में 3 बड़े उलटफेर, पाकिस्तान, न्यूजीलैंड पर मंडराया बड़ा खतरा

नई दिल्ली। वेस्टइंडीज और अमेरिका की संयुक्त मेजबानी में टी20 वर्ल्ड कप खेला जाना है। इस वर्ल्ड कप की शुरुआत दो जून से हुई है और अभी तक छह दिन ही हुए हैं। लेकिन इन छह दिनों में इस वर्ल्ड कप में कुछ ऐसा हो गया है कि क्रिकेट देखने वाले और न देखने वाले भी हैरान रह गए। अभी तक इस टूर्नामेंट में तीन बड़े उलटफेर हुए हैं। ये उलटफेर ऐसे हैं जिसकी उम्मीद किसी ने नहीं की थी। लेकिन छोटी टीमों ने अपने खेल और जज्बे से सभी को हैरान कर दिया। हम आपको इन तीनों बड़े उलटफेर के बारे में बताने जा रहे हैं।

अमेरिका ने पाकिस्तान को पटका इस टूर्नामेंट का सबसे बड़ा उलटफेर मेजबान अमेरिका ने किया। पहली बार टी20 वर्ल्ड कप खेल रही इस टीम से किसी ने उम्मीद नहीं की थी कि ये टीम इतना बड़ा उलटफेर कर देगी। लेकिन इस टीम ने पूर्व विजेता पाकिस्तान को घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया और सुपर ओवर में उसे हरा भी दिया। इस हार के बाद पाकिस्तान की जमकर किरकिरी हुई। पाकिस्तान के पूर्व खिलाड़ियों ने भी टीम पर सवाल उठाए। इस हार से पाकिस्तान की आगे की राह मुश्किल होती दिख रही है।

एक नजर

नहर निर्माण कार्य में तेजी लाने की मांग

जयन्त प्रतिनिधि। कोटद्वारः पूर्व सैनिक संघर्ष समिति ने पूर्वी खोह नहर के निर्माण कार्य में तेजी लाने की मांग की है। कहा कि नहर निर्माण तेजी से होने पर ही काश्तकारों को सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध हो पायेगा। इस संबंध में रविवार को समिति अध्यक्ष महेंद्र पाल सिंह रावत की ओर से प्रदेश विधान सभा अध्यक्ष ऋतु खंडूड़ी भूषण को ज्ञापन सौंपा गया।

मैदानी क्षेत्रों की तरह अब पहाड़ों में भी अपना असर दिखाने लगी गर्मी

रुद्रप्रयाग। जनपद में गर्मी लगातार बढ़ती जा रही है। दो दिन पहले हुई बारिश का भी असर नहीं दिख रहा है। जून प्रथम सप्ताह में गर्मी से स्थानीय लोग ही नहीं तीर्थयात्री भी काफी परेशान है। नगर में दो दिनों से तापमान भी 38 डिग्री रिकार्ड किया गया। गर्मी से लोग सड़कों पर आने से भी परहेज कर रहे हैं। मैदानी क्षेत्रों की तरह अब पहाड़ों में भी गर्मी अपना असर दिखाने लगी है। हालांकि आसमान में हल्के बादलों के बीच भी रविवार दोपहर में तापमान 38 डिग्री रहा। जबकि मौसम साफ रहने पर तेज धूप में तापमान और भी अधिक पहुंच रहा है। नगरीय इलाकों के साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में भी गर्मी का साफ असर दिख रहा है।

अखिल डंग ने जेईई मेंस में पाई सफलता

नई टिहरी। न्यू टिहरी इंटरनेशनल स्कूल के इस वर्ष के सीबीएसई बोर्ड के जनपद टॉपर रहे नई टिहरी निवासी अखिल डंग ने जेईई–मेंस परीक्षा पास कर ली है। उन्हें अखिल भारतीय स्तर पर 6069 रैंक मिली है। अखिल ने बताया कि इस रैंक पर उनका आईआईटी के लिए चयन होना निश्चित है। न्यू टिहरी इंटरनेशनल स्कूल की निदेशक शालिनी जॉली, प्रधानाचार्य प्रवीण भट्ट ने कहा कि सीमित संसाधनों में अखिल ने यह सफलता प्राप्त की है। स्कूल की ओर से उन्हें हमेशा शुल्क सहित अन्य सभी कार्य के लिए सुविधाएं दी जाती रही हैं। इस वर्ष की संजय जॉली स्मृति छात्रवृत्ति के तहत भी स्कूल ने उन्हें 5 हजार रुपये का चेक प्रदान किया।

पुलिसकर्मियों से बदसलूकी का आरोपी युवक गिरफ्तार

नई टिहरी। ट्रैफिक व्यवस्था के दौरान शनिवार शाम को पुलिसकर्मियों से बदसलूकी करने पर आरोपी युवक को गिरफ्तार कर लिया गया। यातायात कार्यालय मुनिकीरेती में तैनात हेड कांस्टेबल नरेंद्र सिंह ने अपनी शिकायत में बताया है कि चारधाम यात्रा के दौरान वह थाना क्षेत्र के ब्रह्मानंद मोड पर ड्यूटी दे रहा था। तभी उसने एक चालक को वाहन रोकने के लिए कहा गया। रोकने के बजाय चालक ने वाहन खड़ा करके ट्रैफिक बाधित कर दिया। जिससे वहां लंबा जाम लग गया। समझाने पर उसे वन–वे की तरफ जाने को कहा गया। लेकिन उसने उनकी नहीं सुनी और उनके साथ अभद्रता की। आरोपी की पहचान 21 वर्षीय आदित्य रांकावत पुत्र रामनारायण निवासी राजस्थानी गेस्ट हाउस तपोवन टिहरी के रूप में हुई। आरोप लगाया कि आरोपी ने सरकारी कार्य में बाधा डालते हुए कांस्टेबल नरेंद्र पर हमला किया।

अविमुक्तेश्वरानन्द नही हैं शंकराचार्य : वासुदेवानन्द सरस्वती

चमोली। शंकराचार्य वासुदेवानन्द ने दावा किया है कि ज्योतिषपीठ के वास्तविक शंकराचार्य वे ही हैं और वे गुरू परंपरानुसार इस पीठ पर आसीन हुए हैं। शंकराचार्य को लेकर मामला न्यायालय में है, उन्हें उम्मीद है कि जल्द निर्णय उनके पक्ष में होगा। रविवार को जोशीमठ के प्राचीन मठ में पत्रकारों से बातचीत में उन्होंने कहा कि कहा कि तीर्थों की मर्यादा एवं गरिमा बनी रहे इसके लिए सरकारों को ठोस कदम उठाने चाहिए। कहा कि धाम की महत्वता कम नहीं होनी चाहिए। स्वामी वासुदेवानन्द ने बदरीनाथ और केदारनाथ को धीरे–धीरे पर्यटन क्षेत्र का रूप लेने पर चिन्ता जताई। कहा कि पहले इन दोनों क्षेत्रों की यात्रा के लिए तीर्थयात्री आते थे लेकिन अब पर्यटक आ रहे हैं जो तीर्थस्थलों के लिए ठीक नहीं है। तीर्थों की मर्यादा का ध्यान रखना सरकार की नैतिक जिम्मेवारी भी है।

71 वाहनों का चालान किया

चमोली। सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने के लिए शनिवार को चारधाम यात्रा मार्ग पर विशेष चैकिंग अभियान चलाया गया। चेकिंग के दौरान यातायात के नियमों का उल्लंघन कराने वाले 71 वाहन चालकों के विरूद्ध मोटर वाहन अधिनियम के तहत चालान किया गया। कार्रवाई कर इनसे 42 हजार रुपये का जुर्माना वसूला गया।

शहर में निकली श्री बालाजी की भव्य शोभायात्रा

जयन्त प्रतिनिधि। कोटद्वारः बालाजी मंदिर के वार्षिकोत्सव के दूसरे दिन शहर में बड़े धूमधाम के साथ बालाजी की भव्य शोभयात्रा निकाली गई। शहरवासियों ने जगह-जगह फूल बरसाकर शोभायात्रा का स्वागत भी किया। इस दौरान शोभयात्रा में शामिल लोगों के लिए जगह-जगह पानी व शर्बत की भी व्यवस्था की गई थी।

रविवार शाम करीब छह बजे बदरीनाथ मार्ग पर टाटा कमर्शियल मोटर्स के समीप से शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा में श्री बालाजी का भव्य रथ आकर्षण का केंद्र रहा। इसके अलावा श्री राम दरवार की झांकी, पंचमुखी हनुमान, तिरुपति बालाजी के साथ ही भगवान की विभिन्न झांकियों ने दर्शकों का मन मोह लिया। शोभायात्रा में श्रद्धालु जय श्री राम के नारे लगाते हुए चल रहे थे। श्रद्धालुओं ने सड़क किनारे खड़े होकर बालाजी के दर्शन कर अपने परिवार व देश के लिए सुख–शांति की कामना की। शोभायात्रा में शामिल श्रद्धालुओं के लिए सड़क

कोटद्वार में निकाली गई शोभायात्रा में शामिल हनुमान जी की झांकी

किनारे जगह–जगह पानी व शर्बत की भी व्यवस्था की गई थी। शहरवासियों ने फूल बरसाते हुए बालाजी के रथ का स्वागत किया। शोभायात्रा बदरीनाथ मार्ग, झंडाचौक, स्टेशन रोड, नजीबाबाद रोड, पेटल मार्ग होते हुए वापस बालाजी मंदिर में पहुंची। इस मौके पर लैंसडौन विधायक दलीप सिंह रावत, भाजपा जिलाध्यक्ष वीरेंद्र सिंह रावत, वार्षिक महोत्सव समिति के अध्यक्ष अनिल कंसल, अनिल अग्रवाल, सुनील गोयल, राजेश जागड़ा, कमल अग्रवाल, सुशील भाटिया, अमन अग्रवाल, राजीव गुप्ता, सुनील खैरवाल, राजेश राणा आदि मौजदू रहे।

निरोग रहने के लिए जीवन में अपनाएं योग

जयन्त प्रतिनिधि।

पौड़ीः राजकीय इंटर कॉलेज जगतेश्वर पाबौ में तीन दिवसीय योग शिविर का शनिवार को समापन हो गया। इस दौरान योग प्रशिक्षकों ने छात्रों को विभिन्न क्रियाओं का योगाभ्यास कराया।

साथ ही बताया कि योग को दैनिक जीवन में अपनाने से बीमारियों से कोसों दूर रहा जा सकता है। तीन दिवसीय शिविर के दौरान आर्ट ऑफ लिविंग संस्था के प्रशिक्षक सुनील पंत और यशोदा रावत ने छात्रों को आसन, प्राणायाम, ध्यान और विश्व प्रसिद्ध सुदर्शन क्रिया का अभ्यास कराया। कहा कि नियमित योग करने से बीमारियों से बचा सकता है। साथ ही उन्होंने नशा मुक्त भारत अभियान के तहत धुम्रपान, तंबाकू, मदिरापान, ड्रग्स जैसे हानिका-रक पदार्थों के शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, आध्यात्मिक, पारिवारिक और सामाजिक दुष्प्रभावों के बारे में बताया।

रिखणीखाल के पठोल गांव में दो माह से नहीं आ रहा पानी

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वारः रिखणीखाल ब्लाक के अंतर्गत पठोल गांव में घर-घर नल तो पहुंच गए। लेकिन, अब तक नलों में पानी नहीं पहुंच पाया है। नतीजा पिछले दो माह से ग्रामीण पानी को तरस रहे हैं। ग्रामीण पानी के लिए जंगलों में प्राकृतिक स्त्रोतों के चक्कर काट रहे हैं।

सरकारी योजना के तहत पठोल गांव में कुछ माह पूर्व घर-घर नल लगाए गए। कुछ दिन तो नलों में पानी आया। लेकिन, पिछले दो माह से नल पूरी तरह सूख गए हैं। नतीजा गांव में पानी नहीं आने से ग्रामीणों को समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामीणों का आरोप है कि जल्दबाजी में बनाई गई योजना के कारण गांव में पेयजल संकट गहराने लगा है। समस्या के समाधान के लिए वह कई बार जल संस्थान को पत्र भेज चुके हैं। लेकिन, अब तक कोई भी अधिकारी या कर्मचारी मौके पर झांकने तक नहीं पहुंचा। ऐसे में ग्रामीण जंगल में प्राकृतिक स्त्रोत के चक्कर काट रहे हैं। जिससे उन्हें जंगली जानवरों का भी खतरा बना हुआ है। ग्रामीणों का पूरा समय केवल पानी की तलाश में ही बीत रहा है।

भीषण गर्मी में पानी को तरसे ग्रामीण

जयन्त प्रतिनिधि। कोटद्वारः तापमान बढ़ने के साथ ही जिले के विभिन्न इलाकों में पेयजल किल्लत बढ़ने लगी है। जिससे लोगों को पेयजल के लिए कई दूर प्राकृतिक पेयजल स्त्रोतों से पानी ढोना पड़ रहा है। जिले के एकेश्वर ब्लाक में इन दिनों पांथर धर्मपुर योजना में पर्याप्त पानी नहीं आने से ग्रामीण परेशान है। पेयजल योजना में पानी कम होने से पांथर, नौगांव, जंडडा देवी, मरोड़ा आदि गांवों में पेयजल संकट खड़ा हो गया है। ग्रामीण कई किलोमीटर दूर से पेयजल ढोने को मजबूर है।

केंद्र सरकार के खिलाफ एनएसयूआई का प्रदर्शन

ऋषिकेश। नीट परीक्षा में हुई धांधली के खिलाफ रविवार को ऋषिकेश के दून तिराहे पर एनएसयूआई का गुस्सा फूट पड़ा।

प्रदर्शन करते हुए एनएसयूआई के कार्यकर्ताओं ने इस मामले की सीबीआई जांच कराने की मांग की। रविवार को एनएसयूआई कार्यकर्ताओं ने दून तिराहे पर पुतला दहन कर नीट परीक्षा में हुई धांधली के प्रति कड़ी नाराजगी जताई। श्रीदेव सुमन विवि परिसर ऋषिकेश के छात्रसंघ अध्यक्ष हिमांशु जाटव ने कहा कि देश व प्रदेश में लगातार पेपर लीक के मामले सामने आ रहे हैं। एक तरफ सरकार रोज़गार देने की बात करती है, वहीं दूसरी तरफ़ पेपर लीक जैसे मामले सामने आने लगते है। सरकार लगातार सरकारी पेपर कराने में असफल साबित हो रही है। जिसका विरोध लगातार एनएसयूआई करती आ रही है। जिलाध्यक्ष युवा कांग्रेस सनी प्रजापति ने कहा कि नीट परीक्षा में हुई धांधली को किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। इसके लिए परीक्षा कराने वाली एजेंसी और सरकार पूरी तरह से जिम्मेदार है। एनएसयूआई और कांग्रेस पार्टी सड़क से लेकर संसद तक युवाओं की आवाज बनने का काम कर रही है। बावजूद इसके केंद्र सरकार तानाशाही कर रही है। कहा कि मामले में सीबीआई जांच कराई जानी चाहिए। युवा कांग्रेस विधानसभा अध्यक्ष गौरव राणा ने कहा कि भाजपा राज में युवाओं का शोषण हो रहा है।

जमीनी विवाद को लेकर हुई मारपीट, तीन गिरफ्तार

जयन्त प्रतिनिधि।

पौड़ीः जमीनी विवाद को लेकर मारपीट कर रहे तीन युवको को पुलिस ने रविवार को गिरफ्तार किया है। आरोपियों को कोर्ट में पेश करने की कार्रवाई की जा रही है।

कोतवाल पौड़ी एनके भटट ने बताया कि रविवार को कंट्रोल रूम से सूचना मिली कि सेंट थॉमस स्कूल के पास दो परिवारों में जमीनी विवाद हो गया है और दोनों पक्ष मारपीट कर लोक शान्ति व्यवस्था भंग कर रहे हैं। जिस पर सीपीयू यूनिट और एचपीयू यूनिट द्वारा मौके पर जाकर मारपीट कर रहे अजय, प्रांजल सिंह और अरुण को गिरफ्तार किया है। बताया कि आरोपियों को कोर्ट में पेश करने की कार्रवाई की जा रही है।

श्रद्धलुओं की उमड़ी भीड़, हाईवे पर लगा जाम

रविवार को श्री सिद्धबली मंदिर में उमड़ी रही श्रद्धालुओं की भीड़

जयन्त प्रतिनिधि। कोटद्वारः रविवार को श्री सिद्धबली मंदिर में भक्तों की भारी भीड़ उमड़ी हुई थी। अधिकांश भक्त अपने निजी वाहनों से बाबा के दर्शन को पहुंच रहे थे। जिसके कारण मंदिर को जाने वाले राष्ट्रीय राजमार्ग पर जाम की स्थिति बनी हुई थी। जाम को खुलवाने के लिए पुलिस को कड़ी मेहनत करनी पड़ी।

कोटद्वार में सिद्धबली मंदिर को जाने वाले मार्ग पर लगा वाहनों का जाम

गढ़वाल के प्रवेश द्वार कोटद्वार में स्थित श्री सिद्धबली मंदिर से सैकड़ों भक्तों की आस्था जुड़ी हुई है। यही कारण है कि मंगलवार व रविवार को मंदिर में सबसे अधिक भीड़ उमड़ी रहती है। रविवार को सुबह से भक्त बाबा के दर्शन को पहुंच रहे थे। सुबह दस बजे के बाद अचानक भक्तों की संख्या बढ़ गई। अधिकांश भक्त अपने परिवार के साथ निजी वाहनों से आ रहे थे। जिसके कारण मंदिर को जाने वाले मार्ग पर पूरे दिन वाहन रेंग–रेंगकर चलते रहे। मंदिर परिसर में वाहनों की पार्किंग फुल हो चुकी थी। वहीं, शहर में जाम की स्थिति विकराल न हो इसके लिए ट्रैक्टर-ट्राली में आने वाले भक्तों की ट्रैक्टर–ट्राली कौड़िया चैक पोस्ट पर ही रोक दी गई थी। अधिकांश भक्त कड़ी धूप के बीच कैड़ि़या से पैदल चलकर मंदिर तक पहुंचे।

पीएम शपथ ग्रहण समारोह में विशेष आमंत्रित अतिथि बने संतोष नेगी

बीरोंखाल के राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय थपला में शिक्षक हैं संतोष

जयन्त प्रतिनिधि। कोटद्वारः कोटद्वार पदमपुर निवासी संतोष नेगी दिल्ली राष्ट्रपति भवन में हुए प्रधानमंत्री शपथ ग्रहण कार्यक्रम में विशेष आमंत्रित अतिथि थे।

वर्तमान में संतोष नेगी बीरोंखाल ब्लाक के राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय थपला में शिक्षक के पद पर तैनात हैं। वर्ष 2016 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मन की बात कार्यक्रम में वर्षा जल संरक्षण के लिए बेहतर कार्य करने पर संतोष नेगी की तारीफ भी की थी।

दिव्यांग शिक्षक संतोष नेगी को दो दिन पूर्व ही शपथ ग्रहण में विशेष आमंत्रित अतिथि का निमंत्रण प्राप्त हुआ। जिसके बाद वह कार्यक्रम में शामिल होने के लिए रविवार को दिल्ली पहुंचे। संतोष नेगी ने बताया कि राष्ट्रपति भवन में हुए शपथ ग्रहण समारोह के वह भी एक साक्षी बने। यह उनके लिए एक गौरव का पल था। शपथ ग्रहण समारोह में विभिन्न देश के मंत्री, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति भी पहुंचे हुए थे। संतोष नेगी पूर्व में राजकीय इंटर कालेज कोटद्वार में कार्यरत थे। उस दौरान उन्होंने विद्यालय में वर्षा संरक्षण के लिए मुहिम भी चलाई थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मन की बात के जरिए शिक्षक संतोष नेगी को बधाई देते हुए कहा कि आपने पहाड़ी इलाके में जल संरक्षण का उदाहरण पेश किया है। इस वर्ष गणतंत्र दिवस परेड में भी संतोष नेगी को आमंत्रित किया गया था।

लंगासू में लाखों रूपये की लागत से बना शौचालय एक माह से बंद, यात्री परेशान

चमोली। बदरीनाथ राष्ट्रीय राजमार्ग पर लंगासू में लाखों रूपये की लागत से बना शौचालय एक महीने से बंद पड़ा है। पूर्व व्यापार संघ अध्यक्ष कैलाश खंडूड़ी ने कहा कि शौचालय बंद रहने से यात्रियों व स्थानीय लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। कई बार डीएम व एसडीएम से इस संबंध में बात की गई, लेकिन कोई सकारात्मक कार्रवाई नहीं की जा रही है।

व्यास गधेर पर बने सुरक्षा दीवाल

चमोली। व्यास गधरे में कर्णप्रयाग–नैनीताल राष्ट्रीय राजमार्ग पर बनी पुलिया को पानी के तेज बहाव से खतरा बना हुआ है।

पूर्व प्रधान सैंजी जगमोहन लखेड़ा का कहना है कि बीते साल क्षेत्र में हुई भारी बारिश के कारण आये मलबे और बोल्डर्स की चपेट से पुलिया की बुनियाद क्षतिग्रस्त हो गई थी। जिसका आज तक मरम्मत नहीं की गई।अब आगामी बरसात में पानी के कटाव के कारण पुलिया को और नुकसान पहुंचने की संभावना बनी हुई है। जिससे क्षेत्र की लाइफ लाइन कही जाने वाला मार्ग बाधित हो सकता है। सिंचाई विभाग के सहायक अभियंता सुशील नेगी का कहना है कि विभाग ने बाढ़ सुरक्षा एवं नियंत्रण के लिए बीस–बीस लाख के छह एस्टीमेट बनाकर शासन को भेज हुए है। बजट मंजूरी के बाद ही पुलिया की मरम्मत की जा सकेगी।

मंगसू गांव में पेयजल आपूर्ति ठप होने से ग्रामीण परेशान

श्रीनगर गढ़वाल। विकासखंड कीर्तिनगर के ग्राम सभा मंगसू और चौरास क्षेत्र में पेयजल किल्लत होने से ग्रामीण पानी के लिए दर–दर भटक रहें है। ग्रामीणों ने जिलाधिकारी को ज्ञापन भेजकर समस्या का समाधान न होने पर आंदोलन की चेतावनी दी है। ग्रामीणों ने कहा है कि वे जिलाधिकारी कार्यालय में धरना देने को बाध्य होंगे। ग्राम प्रधान मंगसू दीपिका देवी ने उपजिलाधिकारी कीर्तिनगर सोनिया पंत के माध्यम से जिलाधिकारी टिहरी को ज्ञापन प्रेषित किया। डीएम को भेजे हस्ताक्षरयुक्त ज्ञापन में ग्राम प्रधान मंगसू दीपिका देवी, वैशाखी देवी, संगीता देवी, बबीता देवी, सुनीता देवी ने कहा कि मंगसू समेत पूरे चौरास क्षेत्र में भारी पेयजल की किल्लत है। जिसके चलते लोगों को दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा हैं। लोगों का कहना हैं कि इससे पूर्व भी जल संस्थान के अधिकारियों समेत उपजिलाधिकारी कीर्तिनगर को भी पेयजल की समस्या को लेकर शिकायत की गई है। लेकिन प्रशासन की ओर से कोई भी सकारात्मक कार्रवाई नहीं हुई है।

नागदेवता मंदिर में भजन संध्या का आयोजन

नई टिहरी। जौनपुर ब्लॉक के ग्राम पंचायत सेंदुल में नाग देवता मंदिर में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा और भजन संध्या का आयोजन किया गया।

इस दौरान ग्रामीणों ने शानदार जागर पर नृत्य कर कार्यक्रम को यादगार बना दिया। लोकगायकों की भजन संध्या में बड़ी संख्या में श्रद्धालु जुटे। सेंदुल गांव में नवनिर्मित नाग देवता मंदिर में मूर्ति की पूजा–अर्चना और हवन के साथ वेदपाठियों ने प्राण प्रतिष्ठा कराई। मुख्य अतिथि पूर्व मंत्री नारायण सिंह राणा और जिला सहकारी बैंक के निवर्तमान अध्यक्ष सुभाष चंद रमोला ने कार्यक्रम में शिरकत कर देवता से आशीर्वाद लिया। कहा कि उत्तराखंड देवभूमि है। यहां पर कण–कण पर भगवान विराजमान हैं। कार्यक्रम में जौनसारी लोक गायक महेंद्र सिंह चौहान, लोकगायिका सीमा चौहान, संदीप कुमार, विनोद चौहान, दिनेश चौहान और अन्य स्थानीय लोक कलाकारों ने नागराज भगवान और माता के भजनों की शानदार प्रस्तुतियां दीं।

मंच का संचालन सुनील सजवाण ने किया। मंदिर समिति के अध्यक्ष सुंदर सिंह पंवार ने कहा कि नाग देवता मंदिर के निर्माण में ग्राम वासियों और रैणी ध्याणियों का सहयोग रहा। सभी ने निर्माण के लिए श्रमदान किया।

ओखलाखाल पालिटेक्निक में डी फार्मा इसी सत्र से

नई टिहरी। राजकीय पालिटेक्निक ओखलाखाल में इसी सत्र 2024–2025 से डी फार्मा का कोर्स भी शामिल कर शुरू किया जायेगा। यह जानकारी देते हुए प्रतापनगर विधायक विक्रम सिंह नेगी ने कहा कि काफी समय से क्षेत्रवासियों द्वारा यहां के बच्चो के लिए डी फार्मा कोर्स की मांग की जा रही थी, जो अब पूरी कर दी गई है। डी फार्मा के लिए यहां के छात्रों को बाहर नहीं जाना पड़ेगा।

मांग पर फार्मेसी काउंसिल आफ इंडिया ने डी फार्मा की परमिशन दी है। कहा कि क्षेत्र की बेहतर शिक्षा के लिए हर संभव प्रयास किया जा रहा है। इससे पलायन पर भी रोक लगेगी। विधायक नेगी के इस प्रयास मुरारी लाल खंडवाल, सबल सिंह राणा, बर्फ चंद्र रमोला, मानसिंह रौतेला, दिनेश रावत, राजेंद्र बोरा आदि ने बधाई दी है।

भारत विकास परिषद ने राहगीरों को पिलाया बुरांस का शर्बत

जयन्त प्रतिनिधि। कोटद्वारः भीषण गर्मी को देखते हुए भारत विकास परिषद की ओर से राहगीरों को बुरांस का शर्बत पिलाया गया।

रेलवे स्टेशन एवं बस अड्डे पर शर्बत वितरण का शुभारम्भ परिषद के अध्यक्ष श्याम सुंदर अग्रवाल ने किया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि गर्मी के दिनों में पानी पिलाना एक पुण्य का काम है। भारत विकास परिषद समय समय पर जन कल्याणकारी कार्यक्रम करता रहता है।

इस अवसर पर पहाड़ से आने व जाने वाले यात्रियों एवं राहगीरों समेत स्थानीय छह हजार से अधिक लोगों को शीतल बुरांस का शर्बत पिलाया गया। राजेन्द्र जखमोला की संयोजिकता में आयोजित शर्बत वितरण कार्यक्रम में अध्यक्ष श्याम सुंदर अग्रवाल के अलावा सचिव प्रदीप अग्रवाल, कोषाध्यक्ष चंद्रमोहन सिंह,

राहगीरों को शर्बत पिलाते सदस्य

प्रांतीय महिला संयोजिका मीनाक्षी शर्मा, संगठन मंत्री गोपाल बंसल, सुभाष नैथानी, कैलाश अग्रवाल, राधेश्याम शर्मा, विष्णु अग्रवाल, सेवक राम मनुजा, गोपाल बंसल, राकेश मित्तल, संदीप अग्रवाल, अनूप बर्थवाल मौजूद थे।

पुरस्कार वितरण के साथ सम्पन्न हुआ शतरंज टूर्नामेंट

नई टिहरी। बौराड़ी गणेश चौक में स्थित एक निजी होटल में प्रथम नई टिहरी ओपन शतरंज टूर्नामेंट का का रविवार को पुरस्कार वितरण के साथ समापन हुआ। बतौर मुख्य अतिथि डीएम मयूर दीक्षित ने शतरंज टूर्नामेंट के ओवर आल चैंपियन सार्थक और अंडर 13 और अंडर 16 में क्रमशः चैंपियन रहे चित्राक्षी और वेदांत कांडपाल को सम्मानित किया। इस मौके पर डीएम दीक्षित ने भी खिलाड़ियों के साथ शतरंज पर हाथ आजमाया। समापन अवसर पर टूर्नामेंट के संयोजक मैती मिलन परिवार के अनुसूया प्रसाद नौटियाल ने सभी प्रतिभागियों का आभार जताया। टूर्नामेंट के आयोजक गढ़वाल प्रमोशन सोसायटी देहरादून के अध्यक्ष राजन सूद ने बताया कि पहली बार नई टिहरी शहर में शतरंज टूर्नामेंट का आयोजन किया गया है। जिससे यहां पर शतरंज खिलाड़ियों में उत्साह देखा गया है। बताया कि टूर्नामेंट की ओपन कैटेगरी में विभिन्न जिलों पौड़ी, चमोली, रुद्रप्रयाग, देहरादून, नैनीताल, हरिद्वार आदि से आए हुए 37 खिलाड़ियों ने प्रतिभाग किया।

जबकि अंडर 16 और अंदर 13 उम्र केटेगरी में कुल 25 बच्चों ने प्रतिभाग किया है। टूर्नामेंट में खेल रहे 80 साल के अति सीनियर सिटीजन बी विश्वास और मोहन नैथानी जहाँआकर्षण का केंद्र रहे। टूर्नामेंट में सबसे कम उम्र के 8 वर्षीय ऋषभ पटवाल व बालिका सांधिया बनियाल प्रतिभाग कर शतरंज की प्रति रूचि दिखाई। टूर्नामेंट में उत्तराखंड के पूर्व स्टेट चैंपियन सार्थक रावत ने प्रतिभाग किया और यहां पर ओवर आल चैंपियन रहे। टूर्नामेंट में टिहरी जिले के अधिकारियों व आम लोगों में जिला सेवायोजन अधिकारी विनायक श्रीवास्तव, क्षेत्रीय खाद्य अधिकारी गरवीन चंद्र भट्ट, ईई विद्युत विभाग दीपक पाल आर्य, एनटीआईएस स्कूल के प्रधानाचार्य प्रवीण चंद्र भट्ट ,शिक्षक राघव बद्रीनाथ, महेंद्र नेगी, शेर सिंह थापा, नैनीताल के चेस आर्बिटर नीरज शाह प्रतिभाग किया। इस मौके पर केंद्रीय गढ़वाल विश्वविद्यालय की शिक्षा विभाग की विभागअध्यक्ष प्रो. सुनीता गोदियाल, जगतमणि पैन्यूली, संजीव भट्ट आदि ने शतरंज खिलाड़ियों को मौजूद रहकर उत्साहवर्धन किया।

एसएसपी ने पदक विजेताओं का किया सम्मान

जयन्त प्रतिनिधि। पौड़ी : देहरादून में हुई 23वीं प्रादेशिक अंतर जनपदीय वाहिनी पुलिस जूडो क्लस्टर प्रतियोगिता में पौड़ी पुलिस ने 3 स्वर्ण और 1 रजत पदक जीता है। शनिवार को एसएसपी लोकेश्वर सिंह ने सभी को सम्मानित करते हुए राष्ट्रीय स्तर पर भी अच्छे प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया। देहरादून में हुई इस प्रतियोगिता में जूडो, वुशू, ताइक्वांडो, कराटे, पेंचक, सिलाट आदि प्रतियोगिताएं पुरुष व महिला वर्ग में हुई। जिसमें टीम प्रभारी महिला अपर उपनिरीक्षक मनाली राठी के नेतृत्व में पौड़ी पुलिस द्वारा शानदार प्रदर्शन किया गया। प्रतियोगिता में महिला अपर उपनिरीक्षक मनाली राठी द्वारा ताइक्वांडो एवं पंचकारसॅलॉस्ट में 1–1 स्वर्ण, मुख्य आरक्षी लवीश कुमार द्वारा वुशु में 1 गोल्ड व मुख्य आरक्षी निपुण जैन द्वारा जूडो में रजत पदक जीतकर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

आधुनिक बनेगा रघुनाथ कीर्ति परिसर का पुस्तकालय

नई टिहरी। केंद्रीय संस्कृत विवि के श्री रघुनाथ कीर्ति परिसर देवप्रयाग स्थित पुस्तकालय को आधुनिक बनाया जाएगा। नए भवन में पुस्तकालय को आईआईटी और आईआईएम की तर्ज पर अत्याधुनिक तकनीक से संपन्न किया जायेगा। रविवार को परिसर भ्रमण पर पहुंचे विश्वविद्यालय के दिल्ली स्थित केंद्रीय पुस्तकालय अध्यक्ष डॉ. पुरनमल गुप्ता ने निदेशक व प्राध्यापकों के साथ बैठक की। बैठक में डॉ. गुप्ता ने परिसर स्थित पुस्तकालय की आवश्यकताओं का भी संज्ञान लिया। छह राज्यों स्थित परिसरों के भ्रमण के बाद रविवार को यहां पहुंचे डॉ. गुप्ता ने देवप्रयाग परिसर स्थित पुस्तकालय को सबसे बेहतर बताया। पर्याप्त भूमि होने एवं विद्यार्थियों व शोधार्थियों के लिए सभी सुविधाएं होने पर उन्होंने सभी परिसरों के लिए इसे आदर्श पुस्तकालय बताया। उन्होंने कहा कि, विवि कुलपति प्रो. वरखेड़ी की इच्छा यहां के पुस्तकालय को विश्व स्तरीय फर्नीचर व आईसीटी युक्त रोल मॉडल के रूप में विकसित करने की है। बैठक में प्राध्यापकों ने छात्रों के लिए अधिक पुस्तकें जारी करने, प्राध्यापकों को जारी पुस्तकों का वर्ष भर में नवीनीकरण करने, उत्तराखंड लोक साहित्य की पुस्तकों का विशेष संग्रह करने आदि का सुझाव दिया। निदेशक प्रो. पीवीबी सुब्रह्मण्यम ने कहा कि डेढ़ वर्ष में परिसर पुस्तकालय का नया भवन बन जायेगा। बीएड, नेट व शोधकार्यों के लिए पुस्तकालय खुलने का समय छात्रों के लिए बढ़ाया जाता है। निदेशक द्वारा केंद्रीय पुस्तकालय अध्यक्ष डॉ गुप्ता को अंग वस्त्र से सम्मानित भी किया गया। इस मौके पर परिसर पुस्तकालय अध्यक्ष नवीन डोबरियाल, डॉ. सच्चिदानंद स्नेही, डॉ. वीरेंद्र बत्वाल, डॉ. अंकुर वत्स, डॉ. अरविंद गौड़, डॉ. ओम शर्मा, डॉ. अवधेश बिजल्वाण, डॉ. रश्मिता आदि मौजूद रहे।

पथरी क्षेत्र में नहीं रुक रही चोरी की घटनाएं

हरिद्वार। शनिवार रात चोरों ने फेरुपुर से ही रोबिन निवासी के घर के अंदर घुसकर स्कूटर और बाइक चोरी कर ली। रास्ते मे एक ग्रामीण की नजर चोरों पर पड़ी तो उसने शेर मचाया। कुछ ग्रामीणों ने चोरों का पीछा किया तो वह बाइक को एक कॉलोनी में छोड़कर खेतों के रास्ते भाग निकले।

एक नजर

मंदिर की छत पर मिला युवक का शव

काशीपुर। तीर्थ स्थल द्रोणासागर में एक मंदिर की छत पर एक युवक का शव मिलने से सनसनी फैल गई। सूचना पर पहुंची आईटीआई थाना पुलिस ने शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। आईटीआई थाना पुलिस को रविवार की सुबह सूचना मिली कि द्रोणासागर में राधा कृष्ण मंदिर की छत पर एक युवक का शव पड़ा है। सूचना पर एसआई प्रकाश बिष्ट ने पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंचकर शव कब्जे में ले लिया। मृतक की जेब से मिले आधार कार्ड के अनुसार उसकी शिनाख्त जसपुरखुर्द निवासी चंदन झा (27 वर्ष) पुत्र ओमप्रकाश झा के रूप में हुई है। मृतक के पिता अहरपुरा में रहते हैं। सूचना पर पहुंचे परिजनों ने उसके शव की शिनाख्त की। चंदन मूल रूप से ग्राम सिद्दीकपुर थाना सराय, जौनपुर का निवासी था। परिवार में वह सबसे बड़ा पुत्र था। जो अविवाहित था और नशे का आदी हो गया था। वह ई–रिक्शा चलाता था और परिवार से अलग रहता था। उसके शव के पास से सल्फास की दस गोलियां व कीटनाशक दवा की शीशी मिली है। आशंका जताई जा रही है कि चंदन ने जहरीले पदार्थ का सेवन कर खुदकुशी कर ली।

गंदे पानी की निकासी रोकने से तालाब बनी सड़क

काशीपुर। ग्राम शिवलालपुर डल्लू के ग्रामीणों ने दो सगे भाइयों पर पानी की निकासी का मार्ग बंद करने का आरोप लगाया है। उनका कहना है कि निकासी बंद करने से नालियों का पानी सड़क पर भरा हुआ है। इससे लोगों को आवाजाही में दिक्कत हो रही है। ग्रामीणों ने एसडीएम को ज्ञापन देकर गंदे पानी की निकासी सुनिश्चित करने की मांग की है।

एसडीएम को दिए ज्ञापन में शिवलालपुर अमरझंडा के लोगों का कहना है कि ग्राम पंचायत के वार्ड संख्या आठ व नौ में पानी की निकासी की व्यवस्था की गई है। लेकिन पूर्व में एक व्यक्ति ने निकासी मार्ग बंद कर दिया। इससे गंदा पानी सड़क में भर आया। शिकायत पर पैगा चौकी पुलिस ने मौके पर पहुंचकर पानी की निकासी सुनिश्चित कराई। कुछ दिन बाद आरोपी और उसके भाई ने फिर से अपने खेत से 50 फिट दूर फिर से निकासी मार्ग को बंद कर दिया। इससे सड़क गंदे पानी के तालाब के रुप में तब्दील हो गई है। ग्रामीणों को वहां से गुजरने में दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामीणों ने पानी की निकासी तत्काल कराने की मांग की है। ज्ञापन देने वालों में ग्राम प्रधान अंकुर कुमार, भोपाल सिंह, सुरेश चंद्र, सुखपाल, सूरजभान, अशोक कुमार, प्रेम, विकास यादव, संजय, अमरजीत, प्रशांत कुमार आदि रहे।

पोस्टर में नंदनी और भाषण में आर्यन रहे अव्वल

ऋषिकेश। राइंका आईडीपीएल में रविवार को समर कैंप के दौरान ऊर्जा बचत पर पोस्टर और भाषण प्रतियोगिता हुई। पोस्टर में नंदनी बड़थ्वाल और भाषण में आर्यन ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता की शुरुआत करते हुए एनएसएस के कार्यक्रम अधिकारी नरेंद्र सिंह रावत ने कहा कि भीषण गर्मी से बचने के लिए ऊर्जा का सदुपयोग किया जाना आवश्यक है। भौतिकवादी युग में सामान्यतः एयर कंडीशन अधिकांश लोग उपयोग कर रहे हैं, जबकि एयर कंडीशन अन्दर तो डंडी हवा देता है और बाहर गर्म हवा फेंकता है। इस कारण बाहर का वातावरण गर्म होता है। इसके लिए हमें अधिक से अधिक वृक्ष लगाने चाहिए तथा पेड़ों का संरक्षण और संवर्धन करना चाहिए। इस दौरान पोस्टर प्रतियोगिता में नंदनी बड़थ्वाल ने प्रथम, आर्यन ने द्वितीय तथा हिमानी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। भाषण में आर्यन ने प्रथम, हिमानी ने द्वितीय तथा नंदनी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

घर में घुसकर युवक को लहूलुहान कर बहन से की अभद्रता

काशीपुर। घर में घुसकर हमला कर युवक को लहूलुहान करने और युवती से अभद्रता के आरोप पर युवती ने पांच लोगों के खिलाफ केस दर्ज कराया है। ग्राम हजीरो फॉर्म निवासी एक युवती ने दर्ज कराई रिपोर्ट में कहा कि 20 मई की रात 8 बजे वह अपने घर पर खाना खा रही थी। तभी गांव के ही गुलफाम, इमरान, कासिम, आशिक व एक अज्ञात व्यक्ति हथियारों से लैस होकर घर में घुस आये। उसके भाई दिलशेर, गुलशेर के बारे में पूछने लगे। मना करने पर आरोपियों ने उसे गालियां देकर मारना पीटना शुरू कर दिया। चीख पुकार सुनकर उसके दोनों भाई आ गये। भाइयों ने उसे बचाने का प्रयास किया तो हत्या के इरादे से आरोपियों ने दिलशेर के सिर पर धारदार हथियार से वार कर लहूलुहान कर दिया। आरोप है कि आशिक ने युवती को लाठी डंडों से मारा।

केदारनाथ हेली सेवा की टिकट बुकिंग जल्द होगी शुरू

देहरादून। केदारनाथ धाम के दर्शन के लिए हेली सेवा का इंतजार कर रहे भक्तों के लिए बहुत बड़ा अपडेट सामने आया है। भक्तजन अब हेलीकॉप्टर से केदारनाथ धाम को दर्शन करने को जा सकेंगे। केदारनाथ हेली सेवा की टिकट बुकिंग की जल्द ही डेट आने वाली है। केदारनाथ हेलीसेवा के लिए मानसून सीजन की बुकिंग जल्द ही शुरू होने जा रही है। नागरिक उड्डयन विभाग ने पहले 10 मई से 20 जून और 15 सितंबर से 30 अक्तूबर तक के लिए हेली बुकिंग प्रारंभ की थी, जो शुरुआती हफ्ते में ही शत प्रतिशत बुक हो चुकी हैं। विभाग ने तब मानसून काल 21 जून से 14 सितंबर के लिए बुकिंग की तिथियां घोषित नहीं की थी, दरअसल इस दौरान एक तो बारिश होने से यात्री घट जाते हैं, वहीं हेली कंपनियां भी अमरनाथ यात्रा में व्यस्त हो जाती हैं। अब विभाग इस समय के लिए भी आईआरसीटीसी के जरिए बुकिंग प्रारंभ करने जा रहा है। यूकाडा के सीईओ सी रविशंकर ने बताया कि आईआरसीटीसी को बुकिंग प्रारंभ करने के निर्देश दिए गए हैं। इस सप्ताह से वेबसाइट पर ही बुकिंग प्रारंभ करने की तिथि और समय जारी कर दिया जाएगा। इसी क्रम में बुकिंग प्रारंभ की जाएगी।

इन तारीखों के लिए स्लॉट : केदारनाथ हेली सेवा के लिए स्लॉट बुक शुरू होने वाले हैं। इस बार जब हेलीकॉप्टर से दर्शन करने के लिए बुकिंग शुरू होगी तो 21 जून से 14 सितंबर के बीच के लिए स्लॉट खुलेंगे। माना जा रहा है कि इस बार भी बुकिंग शुरू होते ही सारे स्लॉट फुल हो जाएंगे। आपको बता दें कि इससे पहले जब भी हेली सेवा के लिए बुकिंग शुरू हुई थी तब चंद ही मिनटों में सारे स्लॉट फुल हो गए थे हेली सेवा के लिए ऐसे करें हेली टिकट बुकिंग : केदारनाथ हेली सेवा टिकट की बुकिंग जल्द ही शुरू होने वाली है। ऐसे में हेलीकॉप्टर से केदारनाथ धाम को दर्शन करने वाले भक्तों का इंतजार खत्म होने वाला है। हेलीकॉप्टर से केदारनाथ जाने वाले तीर्थ यात्री पर टिकट बुक कर सकते हैं।

80 किलो से अधिक वजन पर भक्तों को देना होगा अतिरिक्त शुल्क : केदारघाटी में हेली कंपनी के लिए सख्त नियम बनाए गए हैं। नियम तोड़ने पर विभाग की ओर से सख्त ऐक्शन भी लिया जाता है। केदारघाटी में हेलीकॉप्टर सेवा देने वाली कंपनियों की गाइडलाइन के अनुसार, एक आईडी पर अधिकतम 06 सीटें बुक की जा सकती हैं। इसके अलावा, दो और इससे अधिक उम्र वाले बच्चों का पूरा टिकट लगेगा, जबकि दो से कम उम्र वाले बच्चों का कोई भी टिकट नहीं लगेगा। गौर करने वाली बात यह है कि बच्चों का वजन किसी भी अभिभावक के साथ जोड़ जाएगा। यात्री का कुल वजन 80 किलोग्राम से अधिक होने पर अतिरिक्त शुल्क देना होगा। प्रति किलो के हिसाब से 150 रुपये चार्ज किए जाएंगे।

केदारनाथ हेली सेवा का प्रति व्यक्ति किराया

सिरसी से 5772
फाटा से 5774
गुप्तकाशी से 8126
(प्रति व्यक्ति आना जाना)

आपदा के लिए भी तैनात होगा हेली

यूकाडा ने आपदा सहित किसी भी आकस्मिक परिस्थित के लिए राज्य में एक हेलीकॉप्टर स्थायी रूप से तैनात करने का निर्णय लिया है। आमतौर पर यूकाडा मानसून सीजन के लिए ही दोनों मंडलों में एक – एक हेलीकॉप्टर की तैनाती करता था, लेकिन इस बार उकाडा ने पूरे एक साल के लिए ही हेलीकॉप्टर किराए पर लेने का निर्णय लिया है।

पैदल यमुनोत्री यात्रा कर लौटी श्रीनाग देवता डोली का स्वागत

उत्तरकाशी। भटवाड़ी के उत्तरों गांव के आराध्य श्री नाग देवता की डोली सैकड़ों श्रद्धालुओं की मौजूदगी में छह दिन की पैदल यमुनोत्री धाम की यात्रा कर रविवार को वापस लौटी। गांव में डोली यात्रा का ग्रामीणों ने भव्य स्वागत किया तथा श्रीनाग देवता से गांव व क्षेत्र की खुशहाली और सुख समृद्धि मांगी। उत्तरों गांव के आराध्य श्रीनाग देवता हर पांच वर्ष बाद जून माह में पहाड़ी रास्तों से होते हुए यमुनोत्री की पैदल यात्रा पर निकलते हैं। करीब 55 किमी की पगडंडी वाली पैदल यात्रा के दौरान तीन दिन जाने तथा तीन दिन वापस आने में लगते हैं। बीते 4 जून मंगलवार को श्री नाग देवता की डोली जांगरा होते हुए कफलों, संगमचट्टी, गजोली होते हुए रात्रि विश्राम के लिए नौगांव पहुंची। दूसरे दिन 5 जून को सुबह हवमयनी, मुवायापानी, चौखंभ्या होते हुए हम्यारा, थापा कू चौंर और दामणी, थातरा होते हुए निसणी गांव पहुंची। निसणी गांव में श्री नाग देवता का भव्य स्वागत किया गया। 6 जून को श्री नाग देवता की डोली यमनोत्री धाम पहुंची। जहां डोली संग ग्रामीणों ने मां यमुना के दर्शन किए। पांचवें दिन यात्रा मुख्य पड़ाव गजोली गांव था और छठवें दिन यात्रा उत्तरों पहुंची। ग्राम प्रधान धर्मवीर सिंह ने बताया कि यात्रा गांव की सुख समृद्धि के लिए हर पांच वर्ष में होती है। यात्रा पहाड़ी कठिन रास्तों से होकर गुजरती है।

श्याम सुंदर मंदिर में मूर्ति स्थापना दिवस पर 12 घंटे का अखंड कीर्तन

देहरादून। श्री श्याम सुन्दर मन्दिर पटेल नगर में वार्षिक उत्सव के तीसरे दिन रविवार को प्रभु श्याम सुंदर की 41 वें मूर्ति स्थापना दिवस के उपलक्ष में सुबह पांच से शाम पांच बजे तक 12 घंटे का अखंड कीर्तन शहर की विभिन्न धार्मिक संस्थाओं के सहयोग से संपन्न हुआ। इन संस्थाओं ने एक–एक घंटे का अखंड कीर्तन कर भक्तिमय माहौल बना दिया। मंदिर में हनुमान चालीसा के पश्चात श्री राम कथा करते हुए ऋषिकेश से पधारे आचार्य विनीत डबराल वत्सल ने भगवान शंकर को विश्वास और माता पार्वती को श्रद्धा की संज्ञा देते हुए कहा कि, बिना श्रद्धा और विश्वास के भक्ति फलीभूत नही हो सकती। भक्त के मार्ग पर अनेक कष्ट आते हैं जो उसके धैर्य की परीक्षा लेते हैं। इसलिए भक्ति के मार्ग पर जो भी अवरोध आएं, उन्हें रौंद कर भक्त को अपने भक्ति के मार्ग पर चलना चाहिए। उन्होंने उद्धरण देते हुए कहा जिस प्रकार विभीषण ने श्रीराम के लिए अपने भाई रावण का और प्रहलाद ने श्रीकृष्ण भक्ति के लिएङ्क सच का मार्ग नहीं छोड़ा। उसी तरह हमें भी सत्य के मार्ग का अनुशरण करना चाहिए। वहीं अखंड कीर्तन में विश्व जागृति मिशन, कालिका भवन, श्री वैष्णव दुर्गा मंदिर, गीता भवन, सुंदर काण्ड मंडली, महिला संकीर्तन मंडल, श्री श्याम संकीर्तन मंडल आदि का सहयोग रहा। मीडिया प्रभारी भूपेन्द्र चड्ढा ने बताया कि 1983 को मंदिर को विशालतम रूप देते हुए विशाल मूर्तियों की स्थापना ब्रह्मलीन बालयोगी सर्वदास महाराज के कर कमलों द्वारा की गई थी। इस अवसर पर यजमान बालेश गर्ग, राजेश गर्ग, विवेक सूरी, राधा सूरी, अमरकांत गर्ग ने श्री रामायण जी की पूजा कर व्यासपीठ से आशीर्वाद लिया।

बड़कोट में तीन लाख की स्मैक पकड़ी

उत्तरकाशी। बड़कोट पुलिस और एसओजी टीम ने शनिवार रात को 10.7 ग्राम स्मैक के साथ एक आरोपी को गिरफ्तार किया है।

पुलिस ने आरोपी के खिलाफ एनडीपीएस ऐक्ट में मुकदमा पंजीकृत किया है। पकड़ी गई स्मैक की अंतर्राष्ट्रीय बाजार कीमत करीब तीन लाख रूपये आंकी गई है।

आरोपी स्मैक को यमुनोत्री के जानकीचट्टी क्षेत्र में बेचने की फिराक में था।प्रभारी निरीक्षक बड़कोट सन्तोष सिंह कुंवर तथा एसओजी प्रभारी प्रकाश राणा के नेतृत्व में टीम ने शनिवार रात बड़कोट क्षेत्रान्तर्गत पौंटी पुल बड़कोट के समीप चेकिंग अभियान चलाया। इस दौरान टीम ने 28 वर्षीय गुड्डू राणा पुत्र जर्मन सिंह निवासी ग्राम फिताड़ी, मोरी को 10.07 ग्राम स्मैक की तस्करी करते हुए गिरफ्तार किया।

बिजली चोरी रोकने को अंडरग्राउंड बिजली लाइनों पर फोकस

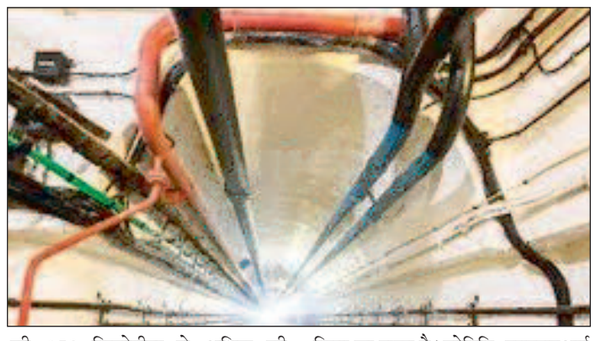

देहरादून। उत्तराखंड में बिजली चोरी रोकने को बिजली लाइनों को अंडरग्राउंड किया जाएगा। पहले चरण में देहरादून शहर में 845 किमी लंबी बिजली लाइनें अंडरग्राउंड होंगी। राजधानी देहरादून के बाद हल्द्वानी, नैनीताल शहरों में बिजली लाइनों पर काम होगा। विदेशों की तर्ज पर देहरादून शहर में बिजली लाइनों को अंडरग्राउंड किए जाने का काम जल्द पूरा होगा। एमडी यूपीसीएल अनिल कुमार ने बताया कि उत्तराखंड क्लाइमेट रिजिलिअन्ट् पावर सिस्टम डेवलपमेंट प्रोजेक्ट के तहत देहरादून शहर के मुख्य सड़कों पर बिजली लाइनों को अंडर ग्राउंड किया जाएगा। इस योजना के लिए एशियन डेवलपमेंट बैंक की ओर से अनुदान और ऋण उपलब्ध कराया गया है। देहरादून शहर में 475 किलोमीटर एचटी और एलटी लाइनों को अंडरग्राउंड किया जाएगा। इसमें 11 केवी की 220 किलोमीटर से अधिक और लो वोल्टेज की 150 किलोमीटर से अधिक की लाइनें शामिल हैं। इसके लिए शहर को तीन क्षेत्रों में बांटा गया है। पहले लॉट में देहरादून सेंट्रल और नॉर्थ डिवीजन का क्षेत्र शामिल है। लॉट दो में साउथ डिवीजन और लॉट थ्री में रायपुर, मोहनपुर के अंतर्गत आने वाले क्षेत्रों को शामिल किया गया है। अभी सभी लॉटस का सर्वे एवं ज्वाइंट सर्वे का काम पूरा किया जा चुका है। लोनिवि, एनएचएआई और एनएच की मंजूरी मिलते ही काम शुरू कर दिया जाएगा।

एमडी यूपीसीएल ने बताया कि बिजली लाइनों को अंडरग्राउंड किए जाने से रखरखाव की समस्या समाप्त होगी। बेहद कम रखरखाव करना होगा। तेज हवा, बारिश और पेड़ों की शाखाओं के गिरने से बिजली सप्लाई प्रभावित नहीं होगी। फॉल्ट कम आएंगे और रखरखाव की लागत कम आएगी। बिजली का लाइन लॉस कम होगा। दुर्घटनाओं का खतरा पूरी तरह समाप्त हो जाएगी। शहर की सड़कों पर बिजली लाइनों का जाल समाप्त होगा। शहर का सौंदर्यकरण होगा। बिजली चोरी पर पूरी तरह रोक लगेगी। पर्यावरण को नुकसान नहीं होगा।

यहां की लाइनें होंगी अंडरग्राउंड

घंटाघर, किशन नगर चौक, रेलवे स्टेशन, बेल चौक, सर्वे चौक, आराघर चौक के आस पास की सड़कों की बिजली लाइनों का अंडरग्राउंड का काम पूरा हो चुका है। मसूरी डायवर्जन से दिलाराम चौक, किशननगर चौक से बल्लूपुर चौक, घंटाघर से तहसील चौक, तहसील चौक से प्रिंस चौक, रेलवे स्टेशन से ग्राफिक ऐरा चौक, आराघर से रिसपना एवं सर्वे चौक से डीईएएल क्षेत्रों की लाइनों को अंडरग्राउंड करने का काम एडीबी प्रोजेक्ट के तहत किया जा रहा है।

स्विट्जरलैंड की युवती के लिए पुलिस बनी फरिश्ता

ऋषिकेश। स्विट्जरलैंड निवासी 30 वर्षीय युवती की स्वर्गाश्रम क्षेत्र में बीते चार जून को अचानक मानसिक स्थिति बिगड़ गई।

स्थानीय लोगों की सूचना पर पुलिस और एलआईयू ने उसे एम्स में भर्ती कर-ाकर इलाज कराया। स्वास्थ्य में सुधार होने के बाद रविवार को उसे एम्स से डिस्चार्ज कर दिया गया। वीजा खत्म होने के चलते युवती का भाई उसे साथ लेकर स्वदेश लौट गया है। लक्ष्मणझूला पुलिस के मुताबिक चार जून को स्थानीय लोगों ने एक विदेशी महिला के लावारिश स्थिति में घूमने की जानकारी दी। एलआईयू कर्मियों के साथ पुलिस ने उसकी खोजबीन की। विदेशी स्वर्गाश्रम क्षेत्र में घूमते मिली। पहचान स्विट्जरलैंड निवासी नेना मारिया जूडिथ के रूप में हुई। पूछताछ में पता चला कि वह अप्रैल में भारत पहुंची थी। यहां घूमने के लिए एक महीने का वीजा लिया था। कई स्थानों पर घूमने के बाद वह तपोवन पहुंची और फिर स्वर्गाश्रम क्षेत्र में आ गई। अचानक मानसिक स्थिति बिगड़ने पर उसका बैग भी क्षेत्र में कहीं गुम हो गया, जिसमें करेंसी, पासपोर्ट और लैपटॉप समेत कीमती सामान था। एलआईयू और पुलिस ने बैग को आखिरकार खोज निकाला। स्विट्जरलैंड के दूतावास को अवगत कराते हुए वीजा भी खत्म होने की जानकारी दी गई, जिसके बाद नेना के परिजनों से पुलिस का संपर्क हुआ। रविवार को उसके स्वस्थ होने पर स्विट्जरलैंड से भाई जोनाथन आंद्रे ओटिगर ऋषिकेश पहुंचा। एम्स से डिस्चार्ज होने के बाद वह उसे स्वेदश लेकर लौट गया। जोनाथन ने पुलिस के मानवीयता के परिचय पर खुशी जाहिर करते हुए हौसला अफजाई भी की।

दून में निकाय चुनाव लड़ने की तैयारी में जुटी सपा

देहरादून। समाजवादी पार्टी जिला कार्यकारिणी की बैठक रविवार को प्रदेश कार्यालय में हुई। इसमें लोकसभा चुनाव में देश की कई सीटों पर जीत मिलने पर हर्ष जताया गया। इसके लिए पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव का आभार भी जताया। इसके साथ ही देहरादून में आगामी निकाय चुनाव मजबूती से लड़ने का ऐलान किया गया। राष्ट्रीय सचिव एवं जिला प्रभारी समाजवादी पार्टी देहरादून गुलफाम अली ने कहा कि देश की जनता ने मोदी सरकार के खिलाफ वोट देकर भाजपा की विभाजनकारी नितियों को नकार दिया है, मंदिर–मस्जिद की भाजपा की नीतियों पर प्रहार किया है। कहा कि अयोध्या के लोगों ने भाजपा को हराकर यह बता दिया है कि प्रभु श्रीराम सबके हैं, केवल भाजपा के नहीं है। राष्ट्रीय सचिव डॉ. राकेश पाठक, प्रदेश वरिष्ठ उपाध्यक्ष हेमा बोरा, लोहिया वाहनी के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष अनुराग कुकरेती, जिला वरिष्ठ उपाध्यक्ष रविंद्र नेगी, लियाकत अब्बासी, तारा राजपूत, शशी कुमार, पुष्कर सिह आदि मौजूद रहे।

काली माता के दर्शनों के लिए उमड़े श्रद्धालु

विकासनगर। जेठ माह के चौथे रविवार को इंद्रोली और जाड़ी स्थित मां काली के मंदिरों में माता के दर्शन के लिए भक्तों की खासी भीड़ उमड़ी। चकराता क्षेत्र के इंद्रोली और जाड़ी गांव में मां काली के पौराणिक मंदिर हैं। जेठ माह में आने वाले हर रविवार को मंदिर में मां काली की पूजा करना अत्यंत शुभ माना जाता है। इन मंदिरों के प्रति लोगों की आपार आस्था जुड़ी हुई है। मंदिर में दर्शन करने के लिए शनिवार रात से ही भक्तों ने इंद्रोली गांव में आना शुरू कर दिया था। रविवार को हजारों की संख्या में लोग मंदिर में दर्शन करने पहुंचे। माता के भक्तों ने कतार में लग कर मत्था टेक सुख समृद्धि की मन्नतें मांगी। इस मौके पर इंद्रोली गांव के दीवान शाह ने मंदिर में भंडारा आयोजित किया। श्रद्धालुओं ने मंदिर परिसर में पारंपरिक हारुल नृत्य भी किया। दूसरी ओर जाड़ी स्थित मंदिर में भी भक्तों की भीड़ लगी रही। श्रद्धालुओं ने मंदिर में प्रसाद के तौर पर गुड़, आटा और चांदी के छत्र चढ़ाकर खुशहाली की कामना की। इस दौरान मंदिर के पुजारी प्रेम जोशी, बजीर टीकम सिंह, भंडारी खजान सिंह, ठाणी केशर सिंह, सतपाल सिंह, देव माली कुंवर सिंह, अरविंद, अतर सिंह आदि मौजूद रहे।

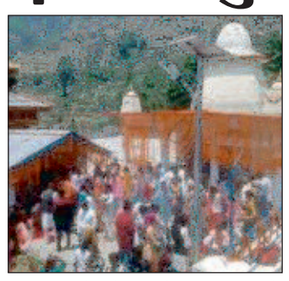

चांद दिखा, 17 को मनाई जाएगी ईदुल अजहा

काशीपुर। ईदुल अजहा का चांद दिख गया है। 17 जून को ईदुलअजहा मनाई जाएगी।

ईदुलअजहा का चांद दिखाई देने के बाद कुर्बानी करने वाले लोग बेहतर नस्ल के बकरे और अन्य जानवरों की तलाश करते हैं। तब तक अपने बाल दाढ़ी नहीं कटाते हैं जब तक कुर्बानी न हो जाए। शहर मुफ्ती मौलाना शमीम अख्तर ने बताया कि कुर्बानी खुदा के लिए की जाती है। लिहाजा, स्वस्थ जानवरों की ही कुर्बानी की जाए। बताया कि ईदुल अजहा का चांद दिख गया है। 17 जून को ईदुल अजहा मनाई जाएगी। बताया कि ईद की फजीलतों के बारे में इमाम सैयद शाने आलम मिस्बाही प्रत्येक नमाज में नमाजियों को जानकारी दे रहे हैं।

कुर्बानी के लिए जारी किया नंबरः मुफ्ती मौलाना शमीम अख्तर ने बताया कि कुर्बानी के तरीके और कुर्बानी से संबधी सवाल पूछने के लिए हेल्प लाइन शुरू की गई है। बताया कि अकीदतमंद उनके मोबाइल नं. 7669848255 पर शाम चार बजे से साढ़े पांच बजे तक कॉल कर कुर्बानी के बारे में जानकारी ले सकते हैं।

सोशल मीडिया पर न डालें कुर्बानी की फोटोः मुफ्ती मौलाना शमीम अख्तर ने कुर्बानी की तस्वीरें और वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल न करने की अपील की। साथ ही कहा कि कुर्बानी के गोश्त को ढककर रखें, जिससे किसी भी व्यक्ति को कोई दिक्कत न हो।

ईदुलजुहा को लेकर बैठक इसी सप्ताहः ईदुलअजहा को लेकर कोतवाली में अमन कमेटी की बैठक इसी सप्ताह होगी। बैठक में ईदुलअजहा को लेकर चर्चा की जाएगी। कोतवाल हरेंद्र चौधरी ने बताया कि बैठक में दोनों समुदायों के लोगों के अलावा अफसर भी मौजूद रहेंगे।

भगवान की भक्ति निस्वार्थ करें

देहरादून। विश्व जागृति मिशन के अपर तुनवाला स्थित आनंद लोक आश्रम में आचार्य महेश शर्मा के पावन सानिध्य में आयोजित सत्संग में संत सुधांशु महाराज ने ऑनलाइन प्रवचन में कहा भगवान की भक्ति निस्वार्थ करनी चाहिए। भगवान हमारे भाव के भूखे हैं। शबरी के प्रेम भाव के वशीभूत होकर भगवान राम दर्शन देने उसकी कुटिया में आए। इससे पूर्व भजन गायकों आचार्य महेश शर्मा, प्रेम भाटिया, सुरेंद्र वागला, भूपेन्द्र चड्ढा, सुषमा भाटिया, अनुराधा शर्मा, सुमन चौधरी ने डूबते को बचा लेने वाले मेरी नैया है तेरे हवाले.., करता रही गुणगान मुझे दो ऐसा वरदान.. आदि भजन सुनाकर भाव विभोर कर दिया।

मोदी के तीसरी बाद प्रधानमंत्री बनने पर भाजपाईयों ने किया दुग्धाभिषेक

ऋषिकेश। तीसरी बार नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने पर रविवार को ऋषिकेश स्थित त्रिवेणीघाट में भाजपाइयों ने खुशी मनाते हुए गंगा में दुग्धाभिषेक किया। इस दौरान भाजपाइयों ने नरेंद्र मोदी के दीर्घायु और स्वस्थ्य रहने की कामना की। भाजपा कार्यकर्ताओं ने अल्मोड़ा से सांसद अजय टम्टा को केंद्रीय मंत्रिमंडल में जगह मिलने पर भी खुशी जताई।त्रिवेणीघाट पर आयोजित कार्यक्रम में कैबिनेट मंत्री प्रेमचंद अग्रवाल के नेतृत्व में सभी कार्यकर्ताओं ने गंगा में दुग्धाभिषेक किया और मां गंगा से प्रधानमंत्री मोदी के दीर्घायु और स्वस्थ रहने की कामना की। मंत्री प्रेमचंद अग्रवाल ने कहा कि आज का दिन बहुत ऐतिहासिक है जब पूरे विश्व के नेता नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री के रूप में लगातार तीसरी बार शपथ ले रहे हैं।

प्रधानमंत्री मोदी 1962 के बाद पहले ऐसे नेता हैं, जो लगातार तीसरी बार शपथ ले रहे हैं। मोदी ने देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के रिकॉर्ड की बराबरी की है। चुनाव के दौरान विपक्षी दलों द्वारा प्रधानमंत्री मोदी के लिए विभिन्न प्रकार का दुष्प्रचार किया गया। मगर, देश की जनता में नरेंद्र मोदी का जलवा बरकरार रहा। इस दौरान केंद्रीय मंत्रिमंडल में उत्तराखंड से अल्मोड़ा सांसद अजय टम्टा को जगह मिलने पर भी खुशी जताई गई। मौके पर मंडल अध्यक्ष सुमित पवार, पूर्व दर्जाधारी संदीप गुप्ता, कृष्ण कुमार सिंघल, इंद्र कुमार गोदवानी, कपिल गुप्ता, बृजेश शर्मा, चेतन शर्मा, संजय शास्त्री, राजकुमारी पंत, जगावर सिंह, अभिनव पाल, कृष पाल, अविनाश भारद्वाज, नंद किशोर जाटव, संजीव पाल आदि उपस्थित रहे।

लोकसभा चुनाव में विचारधारा व संविधान की जीत : पोखरियाल

काशीपुर। सपा की विशेष बैठक में प्रदेश अध्यक्ष शंभू प्रसाद पोखरियाल ने कहा कि लोकसभा चुनाव में विचारधारा और संविधान की जीत हुई है। कार्यकर्ताओं ने एक–दूसरे को मिष्ठान खिलाकर खुशी मनाई। बैठक के दौरान 11 लोगों ने नगर निगम मेयर पद के लिये दावेदारी पेश की।

रविवार को गिरीताल रोड स्थित एक रेस्टोरेंट में प्रदेश अध्यक्ष पोखरियाल की अध्यक्षता में बैठक हुई। बैठक में कार्यकर्ताओं ने उत्तर प्रदेश में संसदीय चुनाव में पार्टी को भारी जीत मिलने पर खुशी जताई। इस दौरान निकाय चुनावों को लेकर संभावित प्रत्याशियों से आवेदन भी मांगे। इसके बाद 11 लोगों ने अपनी अपनी दावेदारी पेश की। प्रदेश अध्यक्ष पोखरियाल ने कहा की उत्तर प्रदेश में जिस प्रकार से राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के नेतृत्व में समाजवादी पार्टी ने अपने सबसे ज्यादा सांसदों को विजय दिलाई है। वहीं उन्होंने भारतीय जनता पार्टी के दोहरे चरित्र को भी बेनकाब किया है। समाजवादी पार्टी उत्तराखंड केप्रदेश प्रभारी हाजी अब्दुल मतीन सिद्दीकी ने कहा कि समाजवादी पार्टी की जीत से हर कार्यकर्ता के अंदर उत्साह है। वह समाजवादी पार्टी का प्रत्येक कार्यकर्ता अखिलेश यादव का प्रतिबिंब है। इस दौरान राष्ट्रीय सचिव यूथ अरविंद यादव, जिलाध्यक्ष रवि छाबड़ा, प्रदेश सचिव अमरदीप सिंह सिद्धू, प्रदेश महासचिव संजय सिंह, अतुल शर्मा, जया ठाकुर, निशा खान, हिना खान, सपना देवी, सुशीला देवी, मोहम्मद नाजिम सैफी, विक्की समेत आदि कार्यकर्ता मौजूद रहे।

बड़कोट में सरकार की बुद्धि–शुद्धि को यज्ञ किया

उत्तरकाशी। बड़कोट में भीषण पेयजल किल्लत से परेशान नगर वासियों ने रविवार को सरकार की बुद्धि–शुद्धि के लिए चंद्रेश्वर महादेव मंदिर में यज्ञ किया। पालिका क्षेत्र के सातों वार्ड के नगरवासी लंबे समय से पेयजल किल्लत से जूझ रहे हैं। नगरवासी यमुना तिलाड़ी से पेयजल पंपिंग योजना का निर्माण किए जाने की मांग कर रहे हैं। स्थानीय लोग तहसील स्थल पर चार दिन से क्रमिक धरने पर बैठे हैं। मालूम हो कि नगर पालिका परिषद बड़कोट में भीषण जल संकट गहराया हुआ है। 6 साल से यमुना नदी से पम्पिंग पेयजल योजना की स्वीकृति की मांग करते आ रहे हैं। लेकिन समस्या का समाधान नहीं होने पर पालिका वासियों ने बीते छह जून से धरना–प्रदर्शन शुरू किया है। जय हो ग्रुप संयोजक सुनील थपलियाल ने कहा कि नगर पालिका क्षेत्र में सरुखेत , छटांगा, चक्रगांव सहित सभी वार्डों के नगरवासी पेयजल संकट से परेशान है। पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष जशोदा राणा, पूरण रावत, और बलवीर असवाल ने कहा कि छोटी छोटी योजनाओं की स्वीकृति से बड़कोट की प्यास नहीं बुझने वाली, यहां के लिए यमुना नदी से पम्पिंग योजना स्वीकृत हो। चंद्रेश्वर महादेव मंदिर में बुद्धि शुद्धि यज्ञ करने वालों में सरपंच अजय रावत ,पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष जशोदा राणा, जय हो ग्रुप संयोजक सुनील थपलियाल, जेपी नौटियाल, दलबीर सिंह, रोहित रावत, मोहित थपलियाल, पूरण सिंह रावत, अजय सिंह, मदन पैन्यूली, दिनेश सिंह रावत, झावर सिंह राणा, जय सिंह चौहान, मनमोहन सिंह रावत, बलबीर असवाल, अक्षांश रावत, विनोद राणा, सुरेश डिमरी सहित दर्जनों लोग मौजूद थे।

जयन्त
संस्थापक
नरेन्द्र उनियाल
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक और
सम्पादक
नागेन्द्र उनियाल
द्वारा जयन्त प्रकाशन डिग्री कॉलेज रोड़, जौनपुर कोटद्वार गढ़वाल (उत्तराखण्ड) से मुद्रित तथा जयन्त कार्यालय चन्द्रसिंह गढ़वाली मार्ग, गैरसैंण, जनपद चमोली उत्तराखण्ड से प्रकाशित
RNI No.UTTHIN/2005/16338